मुस्लिम धर्मानुयायियों का अनुकरणीय चिंतन व चरित्र

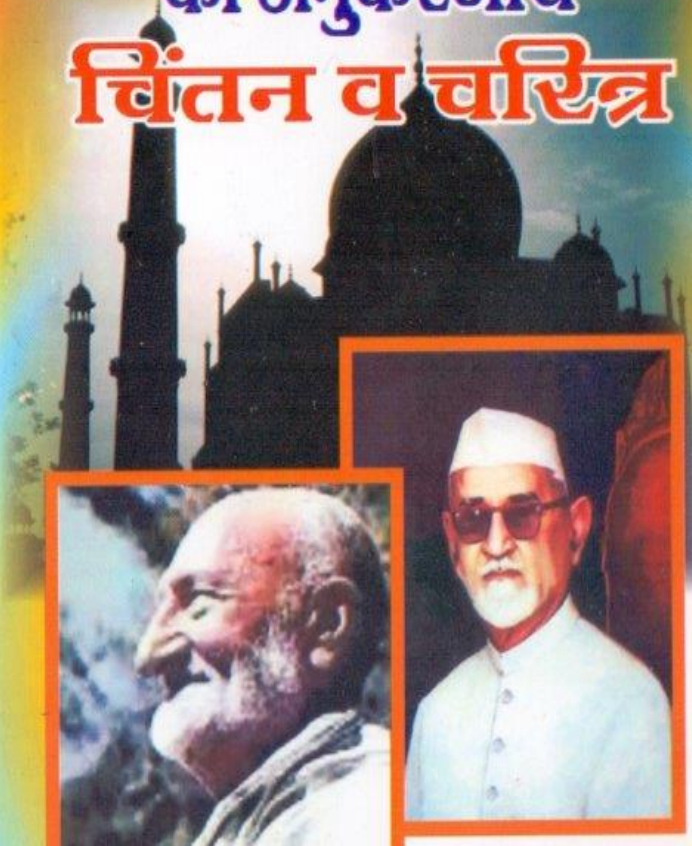

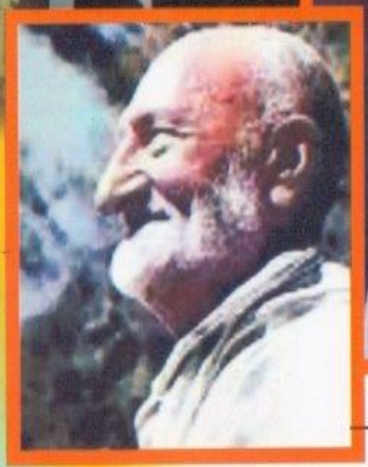

— पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

मुसलिम धर्मानुयायियों का अनुकरणीय चिंतन व चरित्र

लेखक :

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०११ मूल्य : १५.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि

लेखक :
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

पुनरावृत्ति सन् २०१०

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उदात्त संत कवि—ऐन शाह

मुगल वंश के पतन का दौर आरंभ हो चुका था। मुगल साम्राज्य धीरे-धीरे संकुचित होता जा रहा था। उन्हीं दिनों की बात है। दिल्ली के विख्यात मुसलिम संत हजरत फिदा हुसेन के एक 'मुरीद' अपने गुरु से अरबी-फारसी भाषाएँ तथा मुसलिम दर्शन का शिक्षण प्राप्त कर चुके तो उन्हें भारतीय धर्म व दर्शन का ज्ञान प्राप्त करने की प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न हुई। उन्होंने अपने गुरु से इस संबंध में आज्ञा चाही, "हजरत! मैं भारतीय धर्म व दर्शन के अध्ययन की इच्छा रखता हूँ। क्या आप इसकी आज्ञा देंगे।" "क्यों नहीं बेटा! यह तो तुमने बड़ी अच्छी बात कही है। ज्ञानार्जन तो मनुष्य की स्वाभाविक भूख होती है। इसकी तृप्ति में मैं क्यों बाधक बनूँ?"

हजरत फिदा हुसेन का यह ऐन शाह नामक शिष्य उसी दिन से भारतीय धर्मग्रंथों के अध्ययन, चिंतन में प्रवृत्त हुआ तो वह विशुद्ध रूप से भारतीय ही बनकर रह गया। हिंदू धर्म व संस्कृति का जो उदात्त स्वरूप उन्होंने देखा, वह अद्‌भुत व अपूर्व था। उन्हें यह धर्म व संस्कृति एकदेशीय नहीं सार्वभौमिक व चिरंतन लगी। उन्होंने उसे पूरी तरह आत्मसात कर लिया।

ऐन शाह ऐसे पहले व्यक्ति नहीं थे, जो भारतीय धर्म व दर्शन से इस प्रकार प्रभावित हुए हों। रहीम, रसखान, जायसी तथा अन्य कई सूफी संतों पर भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति व अध्यात्म का गहरा प्रभाव पड़ा था।

ऐन शाह इस परंपरा में प्रथम भले ही न रहे हों किंतु अपने कर्तृत्व के बल पर वे उन सबसे अग्रणी ही ठहरते हैं जो भारतीय धर्म-अध्यात्म से प्रभावित हुए थे। उन्होंने हिंदू धर्म, दर्शन व अध्यात्म

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को अपनी साहित्यिक क्षमता से समन्वित कर तत्कालीन समाज को दिशा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित किया था।

इस प्रकार सांप्रदायिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर एवं विश्व मानवता के धरातल पर अधिष्ठित होकर परमात्मा की सेवा के लिए अपने जीवन को समर्पित करने वाले इस नररत्न की जन्म व मृत्यु की तिथियों के संबंध में अभी तक कोई पता नहीं चल सका है। उनका हिंदी काव्य भी मैले-कुचैले, फफूँद लगे ढाई सौ वर्ष पुराने कागजों के रूप में किसी साहित्यान्वेषी के हाथ लगा जिससे उनका यह कर्तृत्व हमारे सम्मुख उजागर हो सका है। जाने ऐसे कितने ही नर-पुंगवों का जीवनवृत्त काल के गाल में छिपा पड़ा होगा, जिन्होंने धार्मिक सहिष्णुता व उदार दृष्टिकोण का परिचय देते हुए यह सिद्ध किया है कि धर्म मनुष्य को संकीर्ण, धर्मांध व रक्तपिपासु नहीं, महान बनाता है।

ऐन शाह ने कालांतर में अपने नाम के साथ शाह नहीं 'आनंद' लगाना आरंभ कर दिया था। अपने एक काव्य ग्रंथ का नाम भी उन्होंने 'ऐनानंद सागर' रखा। यह नामकरण उनके भारतीय धर्म व संस्कृति के प्रति संपूर्ण समर्पण का ही परिचय देता है।

उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग जन-जीवन में धार्मिक व सामाजिक चेतना जगाने वाला साहित्य रचने तथा घर-घर जाकर उसका प्रचार करने में ही व्यतीत किया। ग्वालियर के संतों में उनका प्रमुख स्थान माना गया है। वे दतिया, जयपुर, जोधपुर, अलवर आदि क्षेत्रों में भ्रमण करके लोकशिक्षण व जन-जागरण का महत्त्वपूर्ण दायित्व पूरा करते रहे।

ऐन शाह ने जिस प्रकार उदार हृदय का परिचय देकर भारतीय अध्यात्मवाद के अनुरूप अपने आप को ढाल लिया था, उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुरूप ही अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया था, उसे देखते हुए भारतीय जनमानस ने भी उन्हें उसी उदारता व श्रद्धा के साथ अपना मार्गदर्शक मान लिया था। उनकी ग्वालियर स्थित कुटिया पर हिंदू व मुसलिम श्रद्धालुजनों की भीड़ लगी रहती थी। राजा व रंक सबका इस साधु की कुटी पर समभाव से आदर होता था। तत्कालीन काशी नरेश चेतसिंह के सुपुत्र राजा बालचंद्र उनके शिष्यों में से एक थे। वे जहाँ भी जाते मनुष्यों को सद्मार्ग पर चलने का उपदेश दिया करते थे।

काल गणना के अनुसार वे हिंदी साहित्य के रीतिकाल के अंतर्गत आते हैं। इस काल की कविता को रसलोलुप कवियों ने रूप के हाट की वेश्या बना कोठे पर बिठा दिया था। वह मात्र नारी के मांसल सौंदर्य, नायिका भेद व नख-शिख वर्णन की कुत्सित गलियों में भटककर रह गए थे। यह साहित्य जन-जीवन को पतन के गर्त में गिराने के अतिरिक्त कोई प्रयोजन पूरा नहीं करता था। कविता सामान्य-जन से हटकर चंद राजा, रईसों व चाटुकार कवियों तक ही सीमित रह गई थी। कला रूपी ईश्वरीय प्रसाद से सामान्यजन वंचित ही रह गया था।

कविता को इस कारा से मुक्त कर लोकोपयोगी, आदर्शोन्मुख काव्य की सुरसरिता जन-जन के आँगन में बहाने में उन्होंने भगीरथ की भूमिका निभाई थी। मनुष्य की पाशविक वृत्तियों का ही अंकन करने वाले रीतिकालीन श्रृंगारिक काव्य के जनमानस पर पड़ने वाले दूषित प्रभावों को रोकने के लिए सुरुचिपूर्ण व विचारोत्तेजक धार्मिक साहित्य इतनी अधिक मात्रा में रचा कि वह उनका स्थानापन्न बन सके। आश्चर्य की बात यह है कि इतना अधिक साहित्य-सृजन करने पर भी उनकी कविता का स्तर उच्चकोटि का ही रहा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यों तो अभी उनके द्वारा रचित संपूर्ण साहित्य प्रकाश में नहीं आया है, फिर भी जितना कुछ साहित्य उपलब्ध है उसी से यह अनुमान लगाना असहज नहीं होता कि वे शृंगारिक साहित्य के विरुद्ध किस प्रकार मोर्चा सँभाले हुए थे।

उन्होंने सर्वप्रथम 'सिद्धांत सारिका' नामक ग्रंथ की रचना की। यह दतिया में रचा गया था। इनमें उन्होंने धर्म के शाश्वत सिद्धांतों का निरूपण कविता के रूप में किया था।

संवत् १८०० में उन्होंने जयपुर में 'श्री भगवद् प्रसाद' नामक काव्य ग्रंथ का समापन किया। इसमें ९ इंच × ७ इंच के छह सौ पृष्ठ हैं। इसमें इक्कीस अध्याय हैं। इनकी रचना 'कुंडलियाँ' नामक छंद में हुई है। इनमें वेद, पुराण, शास्त्र आदि के मूल उद्देश्य, भगवद्धर्म, सृष्टि रचना, अवतार कथा, आत्मविद्या, ब्रह्मयोग, वर्णाश्रम धर्म, सिद्धियोग, विज्ञान, तत्त्व, गुण, वृत्तियाँ, परम ज्ञान आदि गूढ़ विषयों का सरल ज्ञान प्रस्तुत किया गया है।

इसके बाद 'उपदेश हुलास' नामक ग्रंथ की रचना हुई। इसके कई पृष्ठ अप्राप्य हैं फिर भी यह पौने सात सौ पृष्ठों का है। इसमें प्रत्येक कुंडली के बाद उसकी टीका भी की गई है। इसका मुख्य विषय गीता के उपदेश हैं।

समाधान ज्ञान, गीता ज्ञान, अनुभव ज्ञान, कार्य-कारण ज्ञान, अध्यात्म ज्ञान, विद्या निर्णय ज्ञान, मीमांसा ज्ञान, शास्त्र ज्ञान आदि सैकड़ों आध्यात्मिक विषयों की तथ्यपूर्ण विवेचना उनके 'स्वयं प्रकाश' नामक काव्य ग्रंथ में की गई है। यह पौने छह सौ पृष्ठों का है। इसमें २१५० चौपाई, १४० दोहे तथा १४० सोरठे हैं।

ईश्वर महिमा व विनय विषयक भक्तियोग का 'सिद्धांत सार' नामक ग्रंथ भी उन्होंने रचा था जिसके लगभग ५० पृष्ठ ही प्राप्त हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सके हैं। यह उच्चकोटि की भक्ति भावनाओं का काव्य संग्रह है, यह इन प्राप्त पृष्ठों से ही ज्ञात हो जाता है। 'श्री ऐनानंद सागर' नामक ग्रंथ के भी अभी थोड़े से पृष्ठ ही प्राप्य हैं। इस संबंध में अभी शोध जारी है। अनुमान किया जाता है कि उन्होंने तीन-चार और वृहद् काव्य ग्रंथों की रचना की है।

इन सभी ग्रंथों की भाषा हिंदी है। अरबी व फारसी के प्रकांड पंडित ने हिंदी में काव्य रचना की और वह भी उच्चकोटि की। वस्तुतः यह उनकी श्रमनिष्ठा व लोकहितकारी दृष्टिकोण का ही परिणाम था। उन्होंने संस्कृत व हिंदी सीखी थी। उनमें अच्छा अधिकार भी पाया था।

अपनी आध्यात्मिक रचनाओं के कारण वे भक्तिकालीन कवियों से भी अधिक गहरे उतरे थे। भक्तिकालीन कवि जहाँ सगुण उपासना व राधा-कृष्ण के अलौकिक प्रेम तक ही सीमित रहे, वहीं उन्होंने क्रांतिकारी कदम उठाए। वे मनुष्य के जीवन को अध्यात्म से समन्वित कर देवोपम जीवन जीने की प्रबल प्रेरणाओं से युक्त साहित्य भी प्रदान करते रहे।

रीतिकाल के ख्याति प्राप्त कवियों के काव्यों से भी उनकी कविता ऊँची ही बैठती है। कहने का अर्थ यह है कि वे समय के प्रवाह के साथ बहने वाले निर्जीव काष्ठ मात्र नहीं थे, वरन उन्होंने धारा के प्रवाह से विपरीत दिशा में भी चल सकने की मछली जैसी सामर्थ्य स्वयं में उत्पन्न की थी।

ऐन शाह भारतीय धर्मशास्त्रों व अध्यात्म के पंडित थे। उन्होंने कथाओं व प्रबंध काव्य की अपेक्षा बौद्धिक व व्यावहारिक स्तर पर प्रत्येक विषय को उठाया। उसके पीछे न उनके अपने पांडित्य प्रदर्शन का भाव था और न काव्य का चमत्कार दिखाने का लक्ष्य ही। वे तो जन सामान्य को धर्म से विमुख जाते देख, शृंगार का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हलाहल पीते देखकर उसे धर्म व अध्यात्म का अमृत पिलाने के लिए सामान्यजन की भाँति आगे आ खड़े हुए थे। आश्चर्य का विषय यह है कि यह लोकशिक्षण का कार्य भिन्न मतावलंबी द्वारा हुआ।

उनके साहित्य को उस युग की प्रसुप्त चेतना को जगाने वाला सचेतक कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। उन्होंने उपासना पद्धतियों, भक्ति व ज्ञान के भ्रमजाल में जनता को नहीं भटकाया वरन वे शुद्ध भावना, शुभ कर्म व सद्व्यवहार, सत् चिंतन से समन्वित किसी भी उपासना पद्धति व मार्ग को हितकर मानते थे।

ऐन शाह ऐसे युग में जन्मे थे जबकि सामंतवाद का बोलबाला था। जिसकी लाठी, उसकी भैंस वाला कानून चल रहा था। संत-महात्मा, त्यागी-विरागी जन-जीवन से पलायन करने की प्रवृत्ति अपना रहे थे, कवि व कलाकार राजाओं, रईसों व सामंतों की कुत्सित भावनाओं के परिपोषण में ही जमीन-आसमान एक कर रहे थे और प्रजा उपेक्षित, अरक्षित व दिशाहीन हो रही थी। ऐसे समय में उनके व्यक्तित्व व कर्तृत्व का नियोजन जिस प्रकार हुआ था, वह कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। तत्कालीन युग चेतना को जगाने का उनका यह प्रयास सराहनीय भी है व अनुकरणीय भी।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भक्ति-मार्ग के अविचल पथिक

सनम साहब

जहाँ इष्ट और उपासक का प्रश्न है, वहाँ यदि उपासक की भक्ति में अविचल निष्ठा हो तो व्यक्ति धर्म और संप्रदाय की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर अपनी उत्कृष्ट भक्ति के कारण सर्वजनीन प्रेम के चरम सत्य तक पहुँच जाता है। उसके लिए फिर मानव मात्र में कोई भेद नहीं रह जाता। कई कृष्ण भक्त मुसलिम संतों ने हिंदू-मुसलमान के विभेद से ऊपर उठकर जनसामान्य को प्रेम और भक्ति की रस-सरिता से आप्लावित किया है। रहीम, रसखान प्रभृति संत इसी कोटि के थे। उसी परंपरा की एक कड़ी थे—सनम साहब।

अपने मार्मिक और भक्तिभावपूर्ण प्रवचनों में उन्होंने श्रीकृष्ण के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए बताया था, "श्रीकृष्ण को हम दो रूपों में भजते हैं—निराकार और साकार। निराकार तीन रूपों में अभिव्यक्त होता है—प्रेम, जीवन तथा आनंद के रूप में। प्रेम ही जीवन विधान है। जीवन सत्यता का आधार है तथा आनंद ही जीवन का मूल उद्देश्य है। श्रीकृष्ण में ये तीनों भाव प्रखर रूप में उद्भासित हुए हैं। श्रीकृष्ण की भक्ति करने का अर्थ इन तीनों में गहन आस्था रखना है। जो इन तीनों में आस्था रखता है, उससे इस जगत का कोई अहित नहीं हो सकता है। होगा तो मंगल ही। भक्ति का अर्थ यही है कि अपने इष्ट में निहित महाभाव उपासक में भी उतरे। श्रीकृष्ण का निराकार रूप सबके लिए उपास्य है। उसके लिए हिंदू-मुसलमान का भेद करना बेमानी है।" सनम साहब के कथन में निहित इस सत्य को सभी धर्मावलंबी समझ सके होते तो धर्म के नाम पर असहिष्णुता कहीं देखने को नहीं मिलती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परम सत्य परमात्मा तक पहुँचने, ईश्वर को पाने के कई मार्ग हैं। उन्हीं में से सबसे सुगम और सहज मार्ग है—भक्ति मार्ग। यही मार्ग सामान्य जन के लिए उपयोगी है। मंदिर, मसजिद और गिरिजों की स्थापना इसी के लिए की गई है। ये सब एकदूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं। इतने अधिक मार्ग होने से मनुष्य को अपने लिए उपयुक्त, मनभावन मार्ग को पाने के लिए अधिक अवसर मिले हैं किंतु ये मार्ग रूढ़ नहीं बना दिए जाएँ, इतने जटिल न बना दिए जाएँ कि पारस्परिक सौमनस्य-सहिष्णुता ही नष्ट हो जाय। सनम साहब का जीवन इसी रूढ़ता को मिटाने का अथक प्रयास कहा जा सकता है।

उन्नीसवीं सदी के आठवें दशक के प्रथम चरण में अजमेर के एक मुसलमान परिवार में जन्मे मोहम्मद याकूब खाँ का बड़े होकर 'सनम साहब' बन जाना यह स्पष्ट करता है कि धर्म व्यक्ति की आस्थाओं पर टिका होना चाहिए न कि जन्म पर। पिता हिंदू धर्मावलंबी है या इस्लाम-परस्त है तो यह आवश्यक नहीं कि पुत्र भी उसी मत को माने। ईश्वर में उसकी आस्था जिस मार्ग का अनुसरण करके दृढ़ होती है, मानवता और लोकमंगल की भावनाएँ जिस पर चलकर क्रियात्मक अभिव्यक्ति पाती हैं, उसे ग्रहण करने में कोई बाधा, दबाव न हो।

किशोर मोहम्मद याकूब को रसखान, सूर आदि कृष्णभक्त कवियों की रचनाओं ने ऐसा मोहा कि वे भी उसी भाव-सरिता में बह चले। पिता संपन्न थे, पढ़ने की जिज्ञासा मन में थी ही सो अपनी लगन और परिश्रम जुटाकर वे संस्कृत, हिंदी, फारसी, उर्दू, अँगरेजी आदि भाषाओं के ज्ञाता बन गए। इन सभी भाषाओं में प्रकाशित होने वाले कृष्ण भक्ति साहित्य का गहन अध्ययन किया। श्रीकृष्ण के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वांगपूर्ण चरित्र ने उन्हें ऐसा मोहा कि उन्होंने अपना सारा जीवन उनकी भक्ति करते हुए लोकसेवा में लगा देने का निश्चय कर लिया।

अपने गुरु की आज्ञा लेकर उन्होंने देश भर में कृष्ण भक्ति और उसके साथ जुड़ी हुई सर्वजनीन प्रेम, जीवन के प्रति दृढ़ आस्था एवं सुख-दु:ख से ऊपर उठकर आनंद के नित्य रस का रसास्वादन करने की भावनाओं का प्रचार करने का उद्योग किया। कहना न होगा कि इस प्रचार के पीछे लोकहित की उत्कृष्ट भावनाएँ छिपी हुई थीं।

सनम साहब एक मुसलमान परिवार में उत्पन्न हुए थे। अत: कई मुसलिम धर्मावलंबी यह समझते थे कि वे मुसलमान हैं, उन्हें कृष्ण भक्ति का प्रचार नहीं करना चाहिए। किंतु उन्होंने न तो इस्लाम को छोड़ा था और न हिंदू धर्म को ग्रहण किया था। वरन वे तो कृष्ण के परमभक्त बन गए थे। उनकी दृष्टि करुणामय हो चुकी थी, जिसमें हिंदू-मुसलमान के विभेद का कुछ भी महत्त्व नहीं था। वे उपासना के क्षेत्र में संकीर्णता को महत्त्वहीन मानते थे।

उनकी इस दृष्टि को समझ सकना कई इस्लाम मतावलंबियों के लिए दुष्कर था। वे उन्हें समझाने के लिए उनके पास पहुँचे। उन्होंने उन्हें बताया कि आप मुसलमान हैं, आपको हिंदुओं के भगवान कृष्ण की भक्ति नहीं करनी चाहिए और न ही उसका प्रचार। इस पर सनम साहब ने बताया कि ईश्वर के दरबार में न कोई हिंदू है और न मुसलमान। मनुष्य अपने प्रभु को जिस रूप में भजना चाहे, वह उसे उस रूप में भज सकता है। भक्ति और उपासना के क्षेत्र में उसके लिए स्वतंत्रता आवश्यक है। चाहे जिस मार्ग में हो मनुष्य को मनुष्य बनना चाहिए। यह उसकी इच्छा पर है कि वह अपने लिए कौन सा मार्ग उपयुक्त समझता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझाने-बुझाने का उन पर कोई असर नहीं हुआ तो कुछ संकीर्णमना धर्मांध लोगों ने उनको जान से मार देने की धमकियाँ भी दीं। पर वे विचलित नहीं हुए। उन्हें ईश्वर ने जिस प्रयोजन से भेजा था, वह पूरा होने तक तो उन्हें कोई मार नहीं सकता था। "उसे जब तक मुझसे कोई काम लेना होगा, तब तक तो मेरा कोई कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकता।"—यह उनका विश्वास था। अत: वे धमकियों से डरे नहीं। कई बार उन पर आक्रमण भी हुए पर हर बार वे बच जाते।

अजमेर में 'श्रीकृष्ण पुस्तकालय' उन्हीं के सद्प्रयासों के फलस्वरूप स्थापित हुआ। इस पुस्तकालय के लिए १२०० दुर्लभ ग्रंथों को संग्रहीत करने के लिए उन्हें बड़ा श्रम करना पड़ा था। धर्म और उपासना के क्षेत्र में मनुष्य की स्वतंत्रता और सभी धर्मों की पारस्परिक सहिष्णुता का यह स्मारक छोटा भले ही हो कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

सन् १९३४ में महामना मालवीय जी ने उन्हें वाराणसी आमंत्रित किया। इनसे भक्ति विषयक वार्त्तालाप करने पर उनके लोक हितकारी विचारों को सुनकर वे बहुत प्रभावित हुए। सनम साहब के व्यक्तित्व में जिस भक्ति, ज्ञान और विद्वत्ता की त्रिवेणी बही थी, उसे देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। महामना ने अपने क्षेत्र में उनके कई प्रवचन कराए। उनकी निष्ठा और भक्ति से कई हिंदू संत-भक्त भी बहुत प्रभावित हुए थे।

कीर्तन करना उनके नित्य कर्म का महत्त्वपूर्ण अंश था। कीर्तन के माध्यम से जन-मन में भक्ति और उदात्त जीवन दृष्टि का रसोद्रेक करना और उसे दिशा देने में वे सिद्धहस्त थे। उन्हीं जैसे एक ईसाई कृष्ण भक्त रोनाल्ट निक्सन से भी उनका निकट संपर्क रहा। भारतीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संस्कृति और धर्म के एक पहलू भक्ति-मार्ग पर आरूढ़ रहकर जन-जीवन में धर्म श्रद्धा को बनाए रखने का, उसे विकसित करने परिपुष्ट करने का उनका जीवन यज्ञ अबाध गति से चलता रहा था। मार्ग के अवरोधों की परवाह उन्होंने कभी नहीं की।

वे किसी की आस्थाओं पर चोट नहीं करते थे। वे श्रीकृष्ण को अवतार मानते थे, पर जो उन्हें महापुरुष मानते थे उनसे भी वे किसी प्रकार का कोई मलाल नहीं रखते थे। विवाद करने की अपेक्षा वे अपनी भावना को स्पष्ट कर देने में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते थे।

१५ अगस्त सन् १९४५ में श्रीकृष्ण की लीला भूमि-ब्रजभूमि में उनका देहावसान हुआ। जिस प्रकार जाति का जन्म से कोई संबंध नहीं होता उसी प्रकार किसी विशेष धर्मावलंबी के घर उत्पन्न होकर ही कोई उस धर्म का अनुयायी नहीं बन जाता। यह तो अपनी श्रद्धा का विषय है। व्यक्ति को धार्मिक होना चाहिए यह तो आवश्यक है पर उसके लिए कोई दुराग्रह पालना ठीक नहीं। इस तथ्य की सत्यता और व्यावहारिकता को उनके जीवन में स्पष्ट देखा जा सकता है। ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म-सहिष्णु सुलतान जैनुल आब्दीन

महा कट्टर सुलतान सिकंदर से परम उदार और धर्म-सहिष्णु सुलतान जैनुल आब्दीन जैसे पुत्र का जन्म होना कैसा विचित्र संयोग है। कश्मीर के हिंदू राजाओं में जो स्थान ललितादित्य मुक्तापी का है, वही मुसलिम शासकों में जैनुल आब्दीन का है। कश्मीर की जनता आज भी इस महान सुलतान को 'बड़े शाह' के नाम से याद करती है। सुलतान जैनुल आब्दीन ने सन् १४२० से १४७० तक ५० वर्ष राज्य किया। इसके शासनकाल में कश्मीर अपने गौरव तथा उत्कर्ष के चरम शिखर पर पहुँच गया था। सभी इतिहासकारों ने एक मत से उसे महान उदार शासक बतलाया है।

सिंहासन पर बैठते ही उसने सबसे पहला काम किया अपने पिता सिकंदर द्वारा चलाए कठमुल्लावाद का अंत करना। उसने संगीत, नृत्य आदि पर से रोक हटा ली। सुलतान स्वयं संगीत का बड़ा प्रशंसक था और उसकी सभा में अनेक महान संगीतकार थे।

सुलतान ने कला-कौशल और शिक्षा के विकास में बहुत ध्यान दिया। कश्मीरी शालों को बनाने के लिए सैकड़ों कारीगर रात-दिन लगे रहते थे और एक से एक सुंदर डिजाइन तथा कलात्मक सज्जा की ओर ध्यान देते थे। कितने ही चित्रकार, मूर्तिकार और कलाकार उसके द्वारा पुरस्कृत हुए। उसने शिक्षा के लिए अनेक मदरसे व विद्यालय स्थापित किए। उसने दूर-दूर से मुल्ला, मौलवी, पंडित तथा आचार्यों को बुलाया और उन्हें जागीर देकर अपने राज्य में बसाया। वह संस्कृत पाठशालाओं के लिए खुले हाथ से दान देता था।

सुलतान स्वयं फारसी, संस्कृत, तिब्बती और कश्मीरी—इन चार भाषाओं का पंडित था। उसे नये-नये ग्रंथ खरीदने और संग्रह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने का बड़ा शौक था। इस शौक को पूरा करने के लिए उसने एक विशाल पुस्तकालय भी बनवाया। उसने दूर-दूर देशों से हजारों ग्रंथ मँगवाये और खुले हाथ से उसका मूल्य चुकाया, जिन्होंने ग्रंथ बेचने से इनकार किया उस ग्रंथ की फौरन साफ, सुंदर अक्षरों में नकल करवाई। मिस्र और बंगाल तक उसके आदमी पुस्तकों की खोज में घूमते रहे। संस्कृत और फारसी का ऐसा कोई ग्रंथ न था, जो सुलतान के पुस्तकालय में न रहा हो।

हजारों ग्रंथ एकत्रित हो जाने के बाद सुलतान ने सोचा कि संस्कृत और फारसी दोनों ही भाषाएँ साहित्य की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध हैं। अत: क्यों न इनके चुने हुए काव्यों व अन्य ग्रंथों का एक से दूसरी भाषा में अनुवाद कर दिया जाए, जिससे फारसी के जानकार संस्कृत का और संस्कृत के जानकार फारसी साहित्य का पूरा-पूरा आनंद उठा सकें। इस प्रकार दोनों साहित्यों की महान सेवा भी हो जाएगी।

ऐसा विचार कर सुलतान ने एक अनुवाद विभाग खोला और कश्मीर के दिग्गज विद्वानों को इस कार्य में लगाया। संस्कृत का ऐसा कोई काव्य-नाटक नहीं था, जिसका फारसी में अनुवाद न हुआ हो। यही बात फारसी के संबंध में भी थी। उसकी सभा में विद्वानों की कमी न थी। योग भट्ट नामक एक विद्वान को फिरदौसी का पूरा 'शाहनामा' ही कंठस्थ था। उसने संस्कृत में इसका सुललित अनुवाद किया। पंडित श्रीवर कवि ने जामीकृत 'यूसफो जुलेखा' का 'कथा कौतुकम' नाम से अनुवाद किया। इसी तरह मुल्ला अहमद ने, जो फारसी और संस्कृत का प्रकांड विद्वान था, महाभारत एवं राजतरंगिणी जैसे विशालकाय ग्रंथों का फारसी में सुंदर अनुवाद किया।

सुलतान जैनुल आब्दीन की उल्लेखनीय विशेषता अपनी हिंदू प्रजा के साथ उदार व्यवहार करना था। उसने उन सभी हिंदुओं को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदरपूर्वक कश्मीर बुलवा लिया, जो सिकंदर की कट्टरता से दुखी होकर जम्मू और पंजाब की ओर भाग गए थे। हिंदुओं को पूरी धार्मिक स्वतंत्रता दे दी गई। उनके तीज-त्योहार एवं पर्वों पर लगी हुई सभी रोक पूरी तरह समाप्त कर दी गई। उसने सिकंदर द्वारा तुड़वाए मंदिरों को फिर से बनवाने और नई मूर्तियाँ प्रतिष्ठित करने की आज्ञा दे दी। सुलतान ने बहुत से मंदिर स्वयं अपने खरच से बनवाए। उनमें मूर्ति-प्रतिष्ठा के समय होने वाले यज्ञ व उत्सव में वह बड़े उत्साह से अपने सभासदों के साथ शामिल होता था।

उसके पिता के शासनकाल में जिन लाखों हिंदुओं को धर्म बदलने के लिए बाध्य किया गया था, उन्हें उसने बड़ी उदारता से आज्ञा दे दी कि यदि वे चाहें तो फिर अपने धर्म में वापस जा सकते हैं। सुलतान की इस देवोपम उदारता से बहुत से लोग फिर अपने पुराने धर्म व जाति में आ गए। हिंदुओं का दिल जीतने के लिए वह दरबारियों के साथ उनके उत्सवों में सम्मिलित होता था, झेलम नदी के जन्मोत्सव के अवसर पर वह नदी के दोनों ओर होने वाली दीपमाला को देखने के लिए सारी रात नदी में ही नाव पर बिता देता था। जगह-जगह होने वाले संगीत-समारोह, नृत्य आदि देखता और दूसरे दिन आयोजित पुष्प-प्रदर्शनी में भाग लेता एवं सबको दान, मान और पुरस्कारों से संतुष्ट करता था।

सुलतान जैनुल आब्दीन जाति और धर्म की संकीर्णता से बहुत ऊपर उठा हुआ था। योग्य व्यक्ति ही उसके शासन में ऊँचे पद पर आते थे। जाति और धर्म का उसमें कोई भेदभाव नहीं होता था। यही कारण था कि उसके समय में हिंदू बहुत ऊँचे और विश्वस्त पदों पर आसीन थे। कर्पूर भट्ट और शिव भट्ट नामक दो आयुर्वेदाचार्य ब्राह्मण सुलतान के व्यक्तिगत चिकित्सक थे। तिलकाचार्य नामक एक बौद्ध विद्वान सुलतान का परामर्शदाता मंत्री था। श्री भट्ट नामक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक विद्वान ब्राह्मण सुलतान के उच्च न्यायालय का प्रधान न्यायाधीश था। सिंह भट्ट और रुप्पय भट्ट उसकी सभा में महान ज्योतिषी थे।

सुलतान बहुत न्यायप्रिय था। वह जब-तब राज्य के विभिन्न भागों का दौरा करता रहता था और खलीफा हारूँ रशीद, विक्रम एवं भोज आदि की तरह वेश बदलकर रात को घूमा करता ताकि प्रजा के सुख-दुःख का पूरा-पूरा पता लगा सके। यदि उसे कोई सरकारी अधिकारी रिश्वत लेता हुआ या अत्याचार करता हुआ मिल जाता तो वह उसे सख्त सजा देता था। उसने मौर्य सम्राट अशोक की तरह अपने राज्य के नियम बड़े-बड़े शिलालेखों में खुदवा दिए थे। गाँव-गाँव में ताम्रपत्रों पर उसकी विभिन्न आज्ञाएँ खुदी रहती थीं। आज भी श्रीनगर के पुरातन संग्रहालय में उसके बहुत से ताम्रपत्र एवं शिलालेख देखे जा सकते हैं।

सुलतान ने कश्मीर की आर्थिक स्थिति सुधारने का बहुत यत्न किया। उसने खेती की दशा सुधारने के लिए अनेक नहरें बनवाईं। श्रीनगर की भार नहर पर सात पुल बनवाए, जिससे आवागमन और व्यापार में बहुत सुविधा हो गई।

कला की उन्नति के लिए उसने अपने आदमी प्रशिक्षण के लिए दूर-दूर देशों में भेजे ताकि वहाँ से नई-नई चीजें, नए-नए इल्म व हुनर सीखकर आएँ। उसने यह नियम बना दिया था कि कोई भी विदेशी कश्मीर को तब तक नहीं छोड़ सकता जब तक कि अपनी कला लोगों को सिखा न जाए। इन कारणों से कश्मीर में कला-कौशल की अभूतपूर्व उन्नति हुई। शालों की कढ़ाई-बुनाई में सदियों बाद आज भी कश्मीर के सामने कोई टिक नहीं सकता। इसी प्रकार लकड़ी का काम, कागज बनाना, आतिशबाजी, रेशम आदि के निर्माण में भी यह प्रदेश बहुत बढ़ा-चढ़ा था और ये चीजें दूसरे देशों को भी पर्याप्त मात्रा में भेजी जाती थीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुलतान बहुत न्यायप्रिय था। न्याय करते समय वह धनी-निर्धन, ऊँच-नीच और अपने-पराये का भेदभाव पास फटकने भी नहीं देता था। चाहे किसी आत्मीय या अधिकारी ने अपराध किया हो, उसे उचित दंड भोगना ही पड़ता था। एक बार उसके एक विश्वस्त साथी मीरशाह ने क्रोध में आकर अपनी पत्नी की हत्या कर दी। सुलतान ने इसके फलस्वरूप उसको मृत्युदंड दिया था।

सुलतान अत्यंत दयालु था। उसने चोर, डाकुओं को मिलने वाला मृत्युदंड समाप्त करके उन्हें उपयोगी कामों में लगाया। उन पर कोड़े नहीं बरसाए जाते थे, सिर्फ जंजीर से बाँधकर रखा जाता था और खेती, खान आदि में उनसे काम लिया जाता था। उसने यह नियम भी बना दिया था कि किसी गाँव या नगर में यदि चोरी, डकैती होगी तो उसके मुखिया को वह सारी रकम भरनी पड़ेगी। इस नियम के कारण सभी मुखिया बहुत चौकन्ने रहने लगे और कश्मीर राज्य से चोरों का अस्तित्व ही मिट गया।

सुलतान के संबंध अन्य देशों से बहुत ही मैत्रीपूर्ण थे और उनसे समय-समय पर बहुमूल्य भेंटों का आदान-प्रदान हुआ करता था। एक बार तैमूर लंग के विद्वान पुत्र समरकंद के शासक शाहरुख ने सुलतान के लिए बहुत से हाथी, हीरे, जवाहरात भेंट भेजे। सुलतान ने धन्यवाद सहित उन्हें वापस करते हुए पत्र लिख भेजा, "यदि आप इनके स्थान पर मेरे लिए कुछ विद्वान तथा अरबी, फारसी और संस्कृत के ग्रंथ भेज सकें तो मुझे बड़ी खुशी होगी।" इससे यह ज्ञात होता है कि सुलतान की नजर में हीरे-जवाहरात से भी ज्यादा कीमत एक विद्वान की थी।

सुलतान प्रजापालन की ओर भी खूब ध्यान देता था। वह प्रजा के सुख और हित के लिए सर्वस्व त्यागने को तैयार हो जाता। सन् १४६० में कश्मीर घाटी में भयंकर हिमपात हुआ, जिससे धान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की फसल को बहुत हानि पहुँची। भूख के कारण लोग जड़ें और पत्तियाँ तक खाने को मजबूर हो गए। हजारों व्यक्ति भूख से तड़प-तड़पकर मरने लगे। लोगों ने अपनी जमीन, मकान, गहने आदि गिरवी रखकर अन्न खरीदा। यह संकट देखकर सुलतान ने सरकारी गोदामों के द्वार खोल दिए। सभी को मुफ्त अन्न बाँटा जाने लगा। जब अकाल दूर हो गया तो सुलतान ने विशेष आज्ञा निकाली कि कोई भी व्यापारी अन्न की कीमत के रूप में गिरवी रखी हुई किसी भी चल या अचल संपत्ति पर अधिकार न करे। अन्न की सारी कीमत सरकारी खजाने से चुकाई जाएगी। इस तरह उस दयालु और उदार सुलतान ने अपनी सारी प्रजा का ऋण खुद ही चुकाया।

सुलतान जैनुल आब्दीन की ६९ साल की अवस्था में १२ मई १४७० शुक्रवार को मृत्यु हुई। उस दिन राज्य में किसी के घर चूल्हा नहीं जला। सारी प्रजा अपने पितृतुल्य सुलतान के लिए रो रही थी। सुलतान की इच्छानुसार कब्र के पत्थर पर क्रमशः पालि, संस्कृत और फारसी भाषाओं में नाम व लेख खोदे गए। सुलतान की कब्र पर तीन प्रमुख धर्मों की तीन भाषाओं में खुदे हुए वे अक्षर आज भी उस धर्म-सहिष्णु सुलतान की अमरगाथा गा रहे हैं।

आज भी कश्मीर में जाकर आप किसी वृद्ध कश्मीरी सज्जन से सुलतान जैनुल आब्दीन की चर्चा करें तो वह आपको भावविभोर होकर बड़े प्रेम से अपने 'बड़े शाह' से संबंध रखने वाली कहानियाँ सुनाएगा। उन पर भले ही आपका पूरा-पूरा विश्वास न हो पर उन शब्दों के पीछे छिपी उन भोले लोगों की भावना से आप प्रभावित हुए बिना न रहेंगे। पाटलिपुत्र में जो स्थान सम्राट अशोक का और उज्जयिनी में विक्रमादित्य का है, वही स्थान श्रीनगर में सुलतान जैनुल आब्दीन का है।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म और जाति से परे
फकीर अजीजउद्दीन

''आप माला के दाने बाहर की ओर फेरते हैं और हम अंदर की ओर। बताइए इन दोनों में कौन सा तरीका श्रेष्ठ है?'' पंजाब केशरी महाराजा रणजीत सिंह ने सिख साम्राज्य के विदेश मंत्री फकीर अजीजउद्दीन से पूछा और फकीर ने बड़ी बुद्धिमत्ता के साथ इस प्रश्न का उत्तर इन शब्दों में दिया, ''महाराज! मुसलमान माला के दाने बाहर की ओर फेरकर दोष निकालने का प्रयास करते हैं जबकि हिंदू अंदर की ओर फेरकर गुण ग्रहण करने का यत्न करते हैं।''

धर्म और जाति की सीमा को पार कर मानवता के अनन्य उपासक फकीर अजीजउद्दीन का जन्म नाई परिवार में हुआ था। उनके पूर्वज बुखारा से आए थे। लाहौर के प्रमुख हकीम लाला हाकिमराय के पास रहकर इन्होंने चिकित्सा का कार्य सीखा और अपनी योग्यता तथा परिश्रमशीलता के आधार पर यह राज दरबार के चिकित्सक बन गए। इतना ही नहीं, फकीर अजीजउद्दीन महाराजा रणजीतसिंह के प्रमुख परामर्शदाता, उच्च श्रेणी के मनोविज्ञानवेत्ता तथा बड़े प्रतिभावान व्यक्ति थे। उनके जीवन की सरलता, सादगी तथा चरित्र की उत्कृष्टता का महाराज पर विशेष प्रभाव था।

अजीजउद्दीन अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। जब महाराजा की जिह्वा पर आंशिक रूप से लकवे का प्रभाव हो गया था, तब तो इनके उत्तरदायित्वों का क्षेत्र भी बढ़ गया था। उच्च अधिकारियों से परामर्श के समय अजीजउद्दीन अनुवादक एवं प्रवक्ता के रूप में सामने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आते थे। महाराजा को उनमें कुशल कूटनीतिज्ञ के गुण दिखाई दिए। इसलिए ईस्ट इंडिया कंपनी से पत्र व्यवहार करते समय उनसे सलाह लिया करते थे।

सैनिक और नागरिक सेना में धर्म और जाति भेद को प्रश्रय न देने की नीति में अजीजउद्दीन की प्रेरणा ने ही काम किया था। महाराज की सेनाओं को सही अर्थों में राष्ट्रीय कहा जा सकता था क्योंकि धर्म और जाति के भेदभाव को तिलांजलि देकर सेना में सभी वर्गों के व्यक्तियों को भरती किया गया था। मुसलमान, सिख, ईसाई, डोगरा, राजपूत और गोरखा सभी तो सेना में थे। ये सैनिक राष्ट्रहित में अपने प्राणों को न्योछावर करने के लिए सदैव तैयार रहते थे। सैन्य संगठन और संचालन में अजीजउद्दीन का प्रमुख हाथ था।

युद्ध-संचालन की तरह शांति स्थापना हेतु उनके प्रयत्नों को भी भुलाया नहीं जा सकता। घटना सन् १८०९ की है। सर चार्ल्स मेटकाफ सिख राज्य की सीमा निर्धारण हेतु आए हुए थे। दोनों ओर की सेनाएँ तैयार थीं। स्वर्ण मंदिर, अमृतसर के शहीदी जत्थे ने गोरी सेना पर आक्रमण कर दिया। उस समय स्थिति बड़ी भयंकर हो गई। ऐसी विकट स्थिति में अजीजउद्दीन ने महाराजा को सलाह दी कि वह अपने गोविंदगढ़ दुर्ग से निकलकर सफेद रूमाल हिलाते हुए सर चार्ल्स मेटकाफ के डेरे की ओर बढ़ें। उनका यह प्रयास शांति का प्रतीक माना जाएगा। महाराज ने ऐसा ही किया। दोनों ओर से मोर्चेबंदी थी। लड़ाई की पूरी तैयारी थी। अजीजउद्दीन की सूझ-बूझ का ही यह परिणाम हुआ कि अमृतसर की युद्धबंदी संधि हो गई और सारे पंजाब में शांति की स्थापना हुई। न जाने इस भयंकर युद्ध से कितनी धन-जन की हानि होती ? महाराजा रणजीतसिंह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और सर विलियम बैंटिक के मध्य जो संधि हुई थी, उसके पीछे भी अजीजउद्दीन का ही हाथ था।

जब काबुल के दोस्त मोहम्मद ने सिखों के विरुद्ध जिहाद की घोषणा की और अफगानिस्तान की सीमा पर मोर्चेबंदी होने लगी उस समय भी अजीजउद्दीन ने आगे बढ़कर वार्तालाप की पहल की और महाराजा को रक्तविहीन विजय दिलवाई। अजीजउद्दीन विदेश मंत्री के रूप में लोकप्रियता प्राप्त करते जा रहे थे। राज्य स्तर की गुप्त से गुप्त मंत्रणा भी इनके अभाव में अपूर्ण मानी जाती थी। वे इस्लाम के अनुयायी होते हुए भी हिंदू धर्म के प्रति पूरी श्रद्धा रखते थे। दिसंबर १८४५ में देशभक्त अजीजउद्दीन ने अंतिम साँस ली।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हिंदू-मुसलिम एकता के प्रतीक अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह 'जफर'

२८ सितंबर १८५७ का सूरज अपनी प्रखर किरणों से लाल किले को दुलार रहा था। उसी समय किले के भीतर कक्ष में नजरबंद अंतिम मुगल सम्राट किसी गंभीर चिंतन में निमग्न थे। पाँसा पलट चुका था। विप्लव असफल रहा था। अपने मन की साध पूरी हो जाने का उस वृद्ध शहंशाह को संतोष था। विजयश्री भले ही न मिली हो अन्याय का प्रतिकार करने वह उठ खड़ा तो हुआ था। उस संतोष की आभा उस श्वेत केशी के फहराती लंबी दाढ़ीयुक्त चेहरे पर चमक रही थी।

अँगरेज सेनापति हडसन ने कक्ष में प्रवेश किया। पहरे पर खड़े संतरी ने एड़ियाँ मिलाकर उसे 'सेल्यूट' दिया। हडसन के साथ एक सैनिक भी था, जिसके हाथ में बड़े से रेशमी रूमाल से ढका हुआ एक थाल था। हडसन ने बादशाह का अभिवादन करते हुए कहा, ''बादशाह सलामत! कंपनी ने आपकी दोस्ती का इजहार करते हुए आपकी खिदमत में यह नायाब तोहफा भेजा है। इसे कबूल फरमाएँ।'' उसके इस कथन के साथ ही सैनिक ने थाल बहादुर शाह 'जफर' के सामने कर दिया। काँपते हाथों से किंतु दृढ़ हृदय से उन्होंने रेशमी कपड़ा हटाया तो अँगरेजों की क्रूरता निरावृत हो गई। उसमें बादशाह के पुत्रों के कटे हुए सिर थे।

हडसन ने सोचा कि बूढ़ा अपने बेटों के कटे सिर देखकर विलाप करने लगेगा। किंतु इस संभावना के विपरीत वृद्ध पिता ने कुछ क्षण अपने पुत्रों के कटे सिरों की ओर देखकर अपनी नजरें हडसन के क्रूर चेहरे पर जमाते हुए निर्विकार भाव से कहा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''अलह हम्दो लिल्लाह! तैमूर की औलाद ऐसे ही सुर्खरु होकर अपने बाप के सामने आया करती है।'' गजब का धैर्य था इस व्यक्ति में।

'जफर' अपमान और परवशता के जीवन से मृत्यु को बेहतर समझते थे। यही कारण था कि अपने पुत्रों के इस असामयिक अंत पर वे दुखी नहीं हुए। वरन प्रसन्न थे कि जो हसरत वे पूरी नहीं कर सके, वह उनके पुत्रों को पूरी करने का अवसर मिला था। बहादुर शाह के मुगल सम्राट बनने के पहले ही मुगल सल्तनत दिल्ली के लाल किले की चहारदीवारी में आ सिमटी थी। वह नाममात्र के बादशाह थे। बादशाह क्या थे अँगरेजों के कृपापात्र उनकी कठपुतली भर थे। वे जैसे चाहते उन्हें नचा सकते थे। उनके पूर्वजों ने विलास से समझौता करके अपने आप को परवश बना दिया था। यही उनके भाग्य की लकीर बनकर उन्हें भी भोगना पड़ा था। किंतु वे कभी उस जिंदगी को भली नहीं मान पाए थे।

सोने के पिंजरे में बंद तोते की जो दशा होती है, वही उनकी भी थी। वे अपनी इस दशा पर सदैव क्षुब्ध व असंतुष्ट थे किंतु करते क्या, उनके पर तो अँगरेजों ने पहले ही उनके पूर्वजों के समय ही काट दिए थे। वे स्वयं को अँगरेजी शासन के चंगुल से बचाना तथा भारत के तत्कालीन राजाओं में स्वतंत्रता की लहर उत्पन्न करना चाहते थे किंतु उसके लिए सभी रास्ते बंद हो चुके थे। यह उनकी बहुत बड़ी व्यथा थी। इस व्यथा को उनके पूर्वज हास-विलास, स्त्री व शराब की दुनिया में उलझकर भुलाते रहे पर वे भुला न सके। वे विद्रोह करना चाहते थे।

बहादुर शाह अच्छे शायर थे। 'जफर' उनका उपनाम था। उनकी शायरी में उनकी यह व्यथा खुलकर सामने आई है। 'लगता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में..... दो गज जमीं ना मिली कूचए यार में।' जैसी कृतियों में उनकी व्यथा अपने पूरे यौवन के साथ उभरी है। मनुष्य की आत्मा हास-विलास, आराम व शौक-मौज से कभी तृप्त नहीं होती। वह तो मानवोचित गौरव-गरिमा युक्त जीवन जीने में ही तृप्ति पाती है। यही कारण था कि 'जफर' का दिल इस उजड़े दयार में नहीं लगता था। वे चाहते थे कि एक पुरुषार्थी व्यक्ति की तरह इस जंजाल से मुक्त हो स्वतंत्रता की वह्नि जलाते किंतु लाचार घुटकर रह जाते।

और फिर वह समय भी आया जबकि उनकी वह चिर संचित अभिलाषा पूर्ण हुई। जिस प्रकार के विद्रोही स्वर उनके हृदय में गूँज रहे थे वैसे ही स्वर अन्य कई लोगों के हृदयतंत्रियों की झंकार बने हुए थे। १८५७ का विप्लव इसी का परिणाम था। भीतर ही भीतर यह आग बवंडर का रूप धारण करती जा रही थी। स्वतंत्रताप्रेमी भारतीय राजाओं, सैनिकों व प्रजाजनों ने विप्लव की पूरी की पूरी योजना बना रखी थी। उसको सुनियोजित ढंग से कार्यान्वित करने के लिए हजारों-लाखों व्यक्ति घर-घर जाकर जन-जन के हृदय द्वारों पर दस्तक दे रहे थे।

इस जनक्रांति के सूत्रधार थे—विठूर के पेशवा नाना साहब। उनके सहयोगियों ने बहादुर शाह 'जफर' से इस जनक्रांति का नेतृत्व करने का अनुरोध किया। 'जफर' अब तक इंतजार करते-करते थक चुके थे। उनके शरीर में वह शक्ति नहीं रही थी कि अपना जौहर दिखा सकें। किंतु अँगरेजों से दो-दो हाथ करने की उमंगें अभी वैसी ही जवान थीं। उन्होंने उस पर सहमति दे दी। यह सब गुप्त रूप से हुआ था। अँगरेजों को इसकी कानों-कान खबर नहीं थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह सुनियोजित क्रांति यदि निश्चित तिथि पर ३१ मई १८५७ के दिन एक साथ सारे भारत में फूटती तो अँगरेज साम्राज्य का पता ही न चलता। किंतु उसके पहले ही मेरठ में सैनिक विद्रोह हो गया और लोगों के धैर्य का बाँध टूट गया और भिन्न-भिन्न तिथियों में भिन्न-भिन्न स्थानों पर विद्रोह हुआ। फिर भी अँगरेजों के होश-हवाश गुम हो गए। पहले-पहल तो सब जगह क्रांतिकारियों की विजय हुई।

१५ मई को लाल किले पर विप्लवी क्रांतिकारियों का अधिकार हो गया। दिल्ली से अँगरेजों का सफाया हो गया। बहादुर शाह 'जफर' को भारत सम्राट बनाया गया। अँगरेजों के हौंसले पस्त हो गए। कई अँगरेज युद्ध में मारे गए व कई बंदी बनाए गए। बंदियों के साथ बहादुर शाह ने मानवोचित व्यवहार किया। १५ मई से १४ सितंबर तक दिल्ली पर क्रांतिकारियों का आधिपत्य रहा। उसके पश्चात अँगरेज प्रबल होने लगे तथा २० सितंबर को बहादुर शाह, उनकी बेगम व बच्चों को अँगरेजों ने बंदी बना लिया। इस प्रकार भारत में क्रांति का शंखनाद फूँकने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान व नेतृत्व रहा।

८० वर्ष के शहंशाह बहादुर शाह पर लाल किले के दीवाने खास में, लेफ्टीनेंट जनरल डगलस के नेतृत्व में ५ सदस्यों की सैनिक अदालत में अभियोग चलाया गया, जिसमें उन्हें काले पानी की सजा सुनाई गई। २७ जनवरी १८५८ को उन्हें रंगून के बंदीगृह में भेज दिया गया। यहाँ एक सामान्य नागरिक की तरह उन्हें बंदी जीवन भोगना पड़ा। कारावास के इस जीवन से जफर व्यथित नहीं हुए थे। वे उसे अपने पापों के प्रायश्चित के रूप में ही लेते रहे। उनकी बेगम व पुत्र-वधुओं के साथ भी अँगरेजों ने मानवीय व्यवहार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं किया। उन्हें भी अपने संरक्षक के साथ दु:ख व कष्ट का जीवन व्यतीत करना पड़ा। किंतु वह जीवन पूर्वजीवन से श्रेष्ठ था। यहाँ आत्महनन की स्थिति नहीं थी। रंगून जेल में ७ नवंबर १८६२ को बहादुर शाह 'जफर' का निधन हो गया। एक सच्चे इनसान, सहृदय कवि व क्रांति के सैनिक के रूप में उन्हें याद किया जाता रहेगा। उनका जीवन हमें आत्महनन करके सुख-ऐश्वर्य भोगने की विडंबना से बचने के लिए सचेत करता रहेगा।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनीति के जन्मजात विरोधी मौलवी अहमदुल्ला

उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे-पाँचवे दशक में आजादी के लिए संघर्ष करने वाले क्रांतिकारियों में विस्मृत योद्धा मौलवी अहमदुल्ला का नाम भी सदैव याद रखा जाना चाहिए। वे आजीवन अँगरेज और अँगरेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह का झंडा लिए खड़े रहे और अपने अनुयायियों को दासता की जंजीरों को तोड़ देने अथवा मर जाने के लिए प्रेरित करते रहे।

पटना (सादिकपुर) के एक विख्यात मौलवी परिवार में उनका जन्म हुआ था। यह परिवार अपनी विद्वत्ता और संपन्नता के कारण भारतीय मुसलमानों के साथ ही साथ उनके संपर्क में आए मुसलिमेतर लोगों में भी आदर की दृष्टि से देखा जाता था। अहमदुल्ला का बाल हृदय आरंभ से ही अँगरेजों की कुटिल नीति तथा अत्याचारों के प्रति घृणा और विद्वेष से भरने लगा था। किशोर वय में ही अपने साथियों को उन्होंने विरोध व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने हेतु संगठनबद्ध भी किया। जिस परिवार का बालक इतना आक्रोश व्यक्त करता है, उसके अभिभावक तो और भी ज्यादा विद्रोह भावना वाले तथा खतरनाक सिद्ध हो सकते हैं। किशोर युवा अहमदुल्ला की गतिविधियों को देख-जानकर अँगरेज अधिकारी उनके परिवार के प्रत्येक सदस्य को संदेह की दृष्टि से देखने लगे। परंतु परिवार के प्रभाव, जनसाधारण का श्रद्धास्पद होने के कारण उन पर हाथ डालने की हिम्मत नहीं हुई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुछ बड़े होने पर अहमदुल्ला ने सीमा प्रांत की विद्रोही सैनिक छावनियों से संपर्क बनाया और उन्हें प्रत्येक आवश्यक सहायता देना आरंभ कर दिया। आदमी, रुपया, हथियार और अन्य प्रकार से उनकी मदद की। इन क्रिया-कलापों का समाचार अँगरेजों के पास भी पहुँचा। उन्होंने पर्याप्त प्रमाण जुटाए और अहमदुल्ला को अपना शिकार बनाना चाहा। जिस अधिकारी को इस कार्य के लिए भेजा था, जनसाधारण का 'मौलवी परिवार' पर अगाध श्रद्धा के कारण वह भी चुप रह गया। विद्रोही छावनी के मुंशी मुहम्मद अली और उसके साथियों को पकड़कर उन्हें ही सजा दी गई और मामला खतम कर दिया गया।

मौलवी साहब को इन घटनाओं से अपनी गतिविधियाँ और अधिक तीव्र करने का साहस मिला। अब आया सन् १८५७। तब तत्कालीन क्रांतिकारियों ने सभी स्थानों पर एक नियत दिन सशक्त संघर्ष छेड़ देने का समय निर्धारित कर लिया था। परंतु हृदय में भरे अपरिमित उत्साह के कारण साहसी और जान की बाजी लगाकर स्वतंत्रता का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए लालायित वीरों ने नियत समय से पूर्व ही विद्रोह कर दिया। फलस्वरूप स्थान-स्थान पर एक साथ मोर्चा सँभालने की अपेक्षा अलग-अलग समय पर लड़ाई चली। अँगरेजों ने स्थान-स्थान पर अपने थोड़े से सैन्य बल से ही विद्रोह कुचलने के सफल प्रयास किए।

पटना भी इस आंदोलन से अछूता कैसे रह सकता था? वहाँ भी उत्तेजना फैलने लगी। यह देखकर तत्कालीन कमिश्नर से न रहा गया। मौलवी साहब को घर बुलाया नगर में शांति रखने के उपायों के संबंध में परामर्श करने के बहाने। मौलवी साहब तो जानते थे कि जन-भावनाओं को और अधिक नहीं कुचला जा सकता। स्वतंत्रता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संघर्ष के रूप में जो विस्फोट हुआ है, वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अवश्य ही सफल होगा। यही पक्ष रखने के लिए मौलवी अहमदुल्ला कमिश्नर टेलर के घर गए। परंतु कुटिल टेलर तो अपने काम की तैयारी पहले से ही कर चुका था। मौलवी साहब को गिरफ्तार कर लिया गया।

सोचा गया था कि जनता को उत्तेजित करने तथा विद्रोह की आग फूँकने का काम मौलवी साहब ही करते हैं। अभी तक तो पटना शहर में उत्तेजना ही फैली थी। जैसे ही लोगों में यह समाचार फैला कि उनके प्रियजन नेता को गिरफ्तार कर लिया गया है, उपद्रव होना शुरू हो गए। ३ जुलाई १८५७ को एक बड़े जनसमूह ने ईस्ट इंडिया कंपनी का झंडा उतारकर अपना झंडा फहराया और स्वाधीनता की घोषणा कर दी। एक सिख रेजीमेंट को यह आंदोलन कुचलने के लिए भेजा गया तो भीड़ ने उसका डटकर मुकाबला किया। शस्त्रास्त्रों से लैस प्रशिक्षित सैनिकों के आगे निहत्थे या थोड़े से हथियारबंद परंतु अप्रशिक्षित लोग कब तक टिके रहते। अंततः सेना जनता पर भारी पड़ने लगी। आंदोलन शांत होने के बाद लगभग चालीस व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया जिनमें से आठ को फाँसी हो गई।

मौलवी अहमदुल्ला बहुत दिनों तक नजरबंद रखे गए। अँगरेजी शासन ने देखा कि यह उपद्रव उनकी गिरफ्तारी के कारण ही जनता ने उत्तेजित होकर किया था तो कमिश्नर टेलर को पद मुक्त कर दिया गया तथा मौलवी साहब रिहा हो गए।

लाखों भारतीयों का खून बहाकर अँगरेजों ने इस क्रांति को विफल कर दिया। परंतु सीमा प्रांत की विद्रोही छावनी की सक्रियता मौलवी साहब के रिहा हो जाने के बाद और भी अधिक बढ़ने लगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रांति के बाद इस छावनी की शक्ति भी काफी बढ़ गई। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले बहुत से विद्रोही सुरक्षा और अपने प्राण बचाकर आजादी के लिए लड़ने की संकल्प पूर्ति की दृष्टि से इस छावनी में आ गए। इस समय हिंदू और मुसलमान सभी धर्म और जाति के लोग विदेशियों को भारत से खेदड़ने के लिए पीढ़ियों से चले आ रहे बैर-भाव को भुलाकर यत्नशील थे। इस छावनी के लोग ब्रिटिश चौकियों पर हमला कर अपनी सामर्थ्य के अनुसार विरोध तथा बगावत की आवाज बुलंद करते। संख्या के रूप में नगण्य रहते हुए भी सन् १८६३ में सीमा प्रांत पर स्थित इस छावनी ने एक बार फिर विद्रोह कर दिया। सन् १८५७ के बाद के वर्षों में उन्होंने पर्याप्त युद्ध-सामग्री जुटा ली थी। सरहद की पहाड़ियाँ एक बार फिर शोले उगलने लगीं। अँगरेजों ने अबकी बार कूटनीतिक चाल चली। पठान कबीलों को अपनी ओर फोड़ लिया। युद्ध जारी रहा परंतु शक्ति और सामर्थ्य की तुलना में अँगरेजी सेनाएँ भारी पड़ीं। एक बार फिर विद्रोह कुचल दिया गया।

इस युद्ध से अँगरेज बौखला उठे और मौलवी अहमदुल्ला को दूसरी बार गिरफ्तार किया गया तथा उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। पंजाब सरकार ने इस मुकदमे में लोगों को बहला-फुसलाकर अपने गवाह खड़े किए। मौलवी साहब पर सरकार के विरुद्ध युद्ध की योजनाएँ बनाने, सीमा प्रांत की छावनी का संगठन करने और सहायता करने तथा विद्रोह के लिए लगातार प्रयास करने के अभियोग लगाकर उन्हें फाँसी की सजा सुना दी गई।

हाईकोर्ट ने इस प्राणदंड को आजीवन कारावास में परिवर्तित कर दिया और उन्हें अंडमान भेज दिया गया। सारी संपत्ति जप्त कर ली गई और उसे नीलाम कर दिया गया। जनसाधारण में से कोई भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्ति देशभक्त का सामान खरीदने के लिए तैयार नहीं हुआ इसलिए सरकारी अफसरों को ही ग्राहक जुटाने पड़े।

अंडमान जेल में भी मौलवी साहब सीमा प्रांत की छावनी को जीवित रखने के लिए योजनाओं पर विचार करते रहे तथा उसे अपने मित्रों, भाइयों और रिश्तेदारों को बताया करते थे।

सीमा प्रांत की यह छावनी जिसे मौलवी अहमदुल्ला ने अपने जीवन से सींचा था सन् १९४७ तक बनी रही और अँगरेजों की छाती पर मूँग दलती रही। भरसक कोशिशें करने पर भी इसे सर्वथा नष्ट नहीं किया जा सका। इस छावनी के अंतिम नेता मौलवी फजल इलाहाबादी थे जो भारत के स्वतंत्र होने के बाद ही इस छावनी से वापस आए।

जो लोग मौलवी साहब और उनके कृत्यों से परिचित हैं, उन्हें नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद सेना के साथ ही मौलवी साहब की इस सीमांत सैनिक छावनी का भी सहज स्मरण हो आता है, जो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने तक संघर्षरत रही। यों स्वतंत्रता का श्रेय अन्यान्य लोगों को भी दिया जा सकता है परंतु मौलवी साहब का साहस और देशप्रेम अभूतपूर्व है।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निःस्वार्थ सेवासाधक हकीम अजमल खाँ

जीविकोपार्जन के साधारण कार्यों में भी उत्कृष्टता का भाव और लोकमंगल का दृष्टिकोण जोड़ लिया जाय तो वह भी साधना बन जाता है। सामान्य स्तर के कार्यों की अपेक्षा साधना स्तर के कार्यों का लाभ कई गुना मिलता है। सभी अध्यात्मवादी और धर्म-साधना में विश्वास रखने वाले इस तथ्य को स्वीकार करते हैं।

स्वीकार करना और बात है और उसे जीवन में उतारना और बात। चिकित्सक के साधारण से कार्य में उत्कृष्ट भाव जोड़कर उसे परमार्थ साधना में रूपांतरित करने वाले व्यक्तियों में हकीम अजमल खाँ का नाम अग्र पंक्ति में गिना जाता है। वे दिल्ली के एक साधारण से हकीम थे। परंतु उनकी ख्याति एक सेवानिष्ठ कुशल चिकित्सक और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में चतुर्दिक फैली। हकीम अजमल खाँ को यह काम अपनी पैतृक विरासत में मिला परंतु जितने अधिक वे विख्यात हुए उतना उनके परिवार में और कोई नहीं हुआ।

अपने साधारण से मकान में प्रातःकाल वे दवाखाना खोलकर बैठ जाते। उनके दवाखाने में सुबह से शाम तक रोगियों तथा उनके परिवार वालों का आना-जाना बना रहता। मरीजों को देखकर वे पर्चा लिख देते, जिस पर बाहर से दवा मिल जाती। लागत से एकाध दो प्रतिशत अधिक मूल्य और गरीब तथा निर्धनों से तो वह भी नहीं। देखने की न कोई फीस और न ही मूल्य। पर बिना किसी प्रकार से हील-हुज्जत सदैव चौबीसों घंटे रोगियों की सेवा के लिए तत्पर।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोई भी किसी भी वक्त उन्हें पुकार सकता था और हकीम साहब चाहे खाने पर बैठे हों या सो रहे हों, तुरंत दौड़कर आ जाते।

सेवाभावना से ओत-प्रोत हकीम साहब का अपने रोगियों के लिए इतना तत्पर तथा तैयार रहना स्वाभाविक ही था क्योंकि उनकी दृष्टि में चिकित्सा उनका व्यवसाय, साधारण काम या जीविका का साधन मात्र ही नहीं था वरन वह भगवान की पूजा और आत्मकल्याण ही अधिक था। इतने निष्ठावान होने के कारण उन्हें अपने कार्य में दक्षता भी खूब मिली। रोगी को भगवान के रूप में देखकर उनकी सुविधाओं का ध्यान रखते हुए हर तकलीफ को ध्यानपूर्वक सुनते, गहराई से रोग को समझने का प्रयास करते और उसका उचित निदानोपाय करते।

भगवान की पूजा समझकर किया गया काम सामान्य काम से अधिक दक्षतापूर्वक और तन्मयता से किया जा सकता है। इसी कारण हकीम साहब की प्रसिद्धि केवल दिल्ली में ही नहीं दूर देशांतर और देशी रियासतों में भी खूब हुई थी। वे अकसर दूसरे शहरों में रोगियों की सेवा के लिए जाया करते थे। राजा-महाराजाओं को भी उन पर इतना विश्वास था कि अपने यहाँ एक पैर से तैयार रहने वाले बड़े-बड़े डॉक्टरों के असफल होने पर वे हकीम साहब को ही याद करते थे। राजपरिवारों में उनका अच्छा मान-सम्मान था।

परंतु वे मान-सम्मान के भूखे नहीं थे। भूखे थे सेवा और उसके पात्र व्यक्तियों के। इसी कारण उन्होंने गरीबों और अधिक बीमारों के लिए राजपरिवार की अच्छी फीस भी कई बार ठुकरा दी। इसी प्रकार की एक घटना है—वे कहीं से मरीज देखकर आए ही थे कि घर पर एक गरीब पिता अपने पुत्र को, जिसकी हालत बहुत खराब थी, लिए बैठा मिला। हकीम साहब उससे बात कर ही रहे थे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि ग्वालियर के राज परिवार का एक संदेशवाहक आया। फीस के लिए हजार रु० पेशगी और महारानी की तबीअत कुछ खराब होने के कारण हकीम साहब को आमंत्रण का संदेश लेकर। हकीम साहब ने महारानी की तबीअत का हाल पूछा तो पता चला कि कोई खास बात नहीं है। उन्होंने अपनी विवशता बताते हुए फीस के पैसे वापस कर दिए और महाराज के लिए एक संदेश कहा, ''महाराजा साहब को मेरा सलाम अर्ज करके कहना कि मैं जरूर हाजिर होता, पर इस वक्त एक गरीब बच्चे का इलाज मेरे हाथ में है और इस बच्चे की जान खतरे में है। यदि मैं इसे छोड़कर चला जाऊँ तो न जाने क्या हो जायगा! महाराजा साहब से मेरी ओर से अर्ज कीजिएगा कि उन्हें तो देश-विदेश के सैकड़ों बड़े-बड़े डॉक्टर मिल जाएँगे पर इस गरीब को कोई दूसरा नसीब न होगा। इसलिए हालात पर गौर कर मुझे इस बार माफी दें।''

निर्धन और अभावग्रस्तों के प्रति इतनी सहानुभूति रखना किसी महान अंत:करण में ही संभव है। सेवा को साधना समझकर उसका लाभ उचित पात्र और आवश्यकता वालों को देना साधना की उत्कृष्टता का ही परिचायक है। हकीम साहब के हृदय में यों तो सभी के लिए समान रूप से आदर और प्रेम था परंतु उनकी सहानुभूति निर्धनों के प्रति विशेष रूप से जुड़ी हुई थी क्योंकि उनके लिए वे ही तो सहज सुलभ थे। अन्य डॉक्टरों की भारी फीस और दवाइयों का खरच उठाना गरीबों के लिए असंभव सा ही था परंतु हकीम साहब के पास आकर वे इन दोनों चिंताओं से मुक्त हो जाते थे।

उनकी सेवानिष्ठा साधना का एक दूसरा स्वरूप और भी है, वह है राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका। सन् १९१९ में उनका परिचय महात्मा गांधी से हुआ। गांधी जी उनकी रीति-नीति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और मर्यादाओं के संबंध में सुनकर उनसे बड़े प्रभावित हुए। हकीम साहब पर भी गांधी जी के विचारों का प्रभाव पड़ा और उन्होंने अनुभव किया कि परतंत्रता के कारण ही अधिकांश लोगों की सामान्य जरूरतें पूरी नहीं होतीं तथा इस स्थिति में देशवासियों का बौद्धिक तथा मानसिक विकास भी अवरुद्ध हुआ पड़ा है।

सार्वजनिक सेवा की भावना से ही वे गांधी जी के अनुयायी बने और स्वदेशी तथा सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया। स्वदेशी आंदोलन के प्रति उनकी आस्था तो इतनी दृढ़ बन गई थी कि वे जिन रोगियों को भी देखने और इलाज करने जाते थे, उनसे अपने देश में बने कपड़े पहनने के लिए कहते थे। एक बार वे किसी रियासत में बीमार बादशाह को देखने गए। सारा महल सिल्क और विदेश के बने रेशमी कपड़ों से सजा था। यह बात उन्हें बड़ी चुभी और महाराज की नब्ज देखते-देखते कह ही दिया, "आप तो देश के खैरख्वाह हैं। आपको तो अपने मुल्क के गरीब परिवारों की चिंता करनी चाहिए और उनके बने कपड़े ही इस्तेमाल करने चाहिए।"

राज परिवार में उनकी प्रतिष्ठा थी। महाराजा ने तुरंत सब विदेशी कपड़े हटवाकर खादी के कपड़ों का व्यवहार करने का आदेश दिया। स्वदेशी के प्रश्न पर एक बार तो वे किसी रियासत के हिज हाईनेस से नाराज भी हो गए थे। उक्त हिज हाईनेस ने खद्दर का व्यवहार करने के आग्रह पर यह कह दिया था कि हमें खादी पहनने पर कोई एतराज नहीं, परंतु क्या करें वह बड़ी मोटी होने के कारण बदन पर चुभती है।

यह सुनकर हकीम साहब समझाकर यह कहते हुए उठ आए थे कि मैं उसी दिन आपके दीवान खाने में आऊँगा जिस दिन आप सब लोग खादी पहनने लगेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वदेशी पर जोर देने का कारण हकीम साहब का गरीबों के प्रति हृदय में बसने वाला सहृदयता का भाव ही था। वे जानते थे कि विदेशी कपड़े पहनने वाले लोग इस देश के उन लोगों के पेट पर लात मारते हैं, जिनकी जीविका का एकमात्र साधन बुनकर का धंधा है।

जाति और धर्म से मुसलिम तथा इस्लाम मत के कट्टर अनुयायी होते हुए भी उन्होंने धर्म तथा संप्रदाय के भेदभाव को निंद्य दृष्टि से ही देखा। गांधी जी उन्हें सांप्रदायिक मामलों में अपना सलाहकार मानते थे। धर्म और संप्रदाय के मामले में कट्टर पंथी और दुराग्रहपूर्ण विचार रखने वालों से उनकी कभी नहीं पटी। उन्होंने कई अवसरों पर ऐसे लोगों की तीव्र भर्त्सना की।

उन्होंने राजनीति के क्षेत्र में नौ वर्ष तक ही सेवा की। दिसंबर १९२७ में उनकी मृत्यु हो गई। ६५ वर्ष तक चिकित्सा और राजनीति के क्षेत्र में वे अपने आराध्य 'मानव' की पूजा करते रहे। चिकित्सा जगत की ही भाँति राजनीति के क्षेत्र में भी उन्होंने इतना काम किया जितना कि कई व्यक्ति जीवन भर में भी नहीं कर पाते। उनकी रग-रग में ईश्वर की सार्थक उपासना, खुदा की सच्ची इबादत, नस-नस में देश प्रेम और हर सांस में राष्ट्रीयता थी। हकीम अजमल खाँ ने अपने सेवापरायण जीवन में खोया कुछ नहीं, पाया ही है जिसके कारण वे सदा याद किए जाते रहेंगे। स्वयं अपने जीवन में भी उन्हें अपनी सेवानिष्ठा का प्रतिदान आत्मसंतोष के रूप में मिला।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाधीन भारत के स्वप्नद्रष्टा बदरुद्दीन तैयबजी

बदरुद्दीन तैयबजी ने अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत बंबई (मुंबई) में हाईकोर्ट की वकालत से की। जिस समय वे एडवोकेट बने, उस समय बंबई में कोई भी भारतीय वकील नहीं था। उन दिनों एक साधारण सा यूरोपीय व्यक्ति भी उच्च शिक्षा प्राप्त भारतीय से अधिक प्रतिष्ठित समझा जाता था। चूँकि देश का शासनतंत्र उनके अधीन था। भारतीय पराधीन और शासित जाति का गुलाम व्यक्ति था, इसीलिए भारतीय परिवार स्वयं को अन्य परिवारों की दृष्टि में ऊँचा सिद्ध करने के लिए बड़ी तेजी से अँगरेजी सभ्यता अपनाने में लगे हुए थे। ऐसे लोग जनता में भी ऊँचे समझे जाते थे, जिन्हें अँगरेजों के संपर्क में आने, उनकी खुशामद करने और तलवे चाटने का अवसर मिला होता।

तैयबजी के सभी साथी एडवोकेट और बैरिस्टर यूरोपियन तथा गोरी चमड़ी के थे। जनता भी उन्हें एक काले देशी वकील की अपेक्षा ज्यादा सम्मान देती थी। सरकार की कृपादृष्टि से जितने यूरोपियन बैरिस्टर लाभान्वित होते थे, उसकी तुलना में भारतीय वकील एकदम हेय और गिरा हुआ ही माना जाता था तथा उतनी ही उसकी उपेक्षा भी की जाती थी। तैयबजी को अपनी वकालत जमते दिखाई नहीं दी। कई मित्रों ने सलाह दी कि वे किसी भी प्रकार अँगरेजों से संबंध बनाएँ और उनकी मैत्री का लाभ उठाएँ। वे अच्छी तरह जानते थे कि इस प्रकार वे अपना आत्मसम्मान बेचकर ही अँगरेजों के मित्र बन सकते हैं। "आज राजनीतिक रूप से भले ही हम गुलाम हों, पर जब भी अवसर मिला तो दासता की बेड़ियों पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रहार कर उन्हें अवश्य तोड़ेंगे लेकिन किसी भी कीमत पर मानसिक दासता को स्वीकार नहीं करेंगे''—यह कहकर तैयबजी ने मित्रों का परामर्श ठुकरा दिया।

उनकी ही तरह कई बैरिस्टरों—फिरोजशाह मेहता, एच० वाडिया आदि लोगों ने वकालत शुरू की और जल्दी ही हतोत्साहित होकर बैठ गए परंतु तैयबजी न तो परिस्थितियों के सामने प्रतिपक्ष से समझौता करना जानते थे और न ही कर्मक्षेत्र से घबराकर हट जाना उन्हें आता था। पराजय स्वीकार कर प्रतिपक्ष से समझौता करना उन्हें आत्मसम्मान खोने जैसा लगता था। इसी कारण वे एक गौरवशाली भारत पुत्र बनकर जिए। उन दिनों जब उनकी वकालत नाममात्र को भी नहीं चल रही थी, प्रचलित परंपरा के अनुसार वे भी अपने अन्य साथियों की तरह नए अँगरेज न्यायाधीश पार्सन से मुलाकात करने उनके निवास स्थान पर गए।

कोई काला भारतीय वकील भेंट करने के लिए आया देखकर पार्सन ने उनकी उपेक्षा करते हुए बड़े अफसराना लहजे में कहा, ''मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ? इस वक्त मैं बहुत व्यस्त हूँ।''

बदरुद्दीन जी को यह अपमान बड़ा खटका। वे अपनी स्थिति को समझते हुए भी बड़ी शान के साथ उठते हुए बोले, ''अच्छी बात है। मुझे भी काम है।'' और चल दिए।

पार्सन को अपनी गलती अनुभव हुई और तैयबजी को नाराज होते देखा तो शिष्टता के नाते वे उनके पीछे बग्घी तक आए और गलती सुधारने के लिए बग्घी और घोड़ों की प्रशंसा करने लगे। तैयबजी जानते थे कि पार्सन यह सब केवल औपचारिकता जताने और अपनी गलती को भूल सिद्ध करने के लिए ही कर रहे हैं। इसलिए वे रुके नहीं, चलते ही बने।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाद में मजिस्ट्रेट ने अपने साथियों और बैरिस्टरों से इस घटना की चर्चा की। तैयबजी के विचार सही निकले। पार्सन इसे व्यस्तता के कारण अपनी भूल ही साबित कर रहा था और तैयबजी को घमंडी बता रहा था। बैरिस्टरों ने इस घटना के संबंध में उनकी ही निंदा की। परंतु तैयबजी निश्चिंत ही रहे।

उन्हें अधिक दिनों तक बेकार नहीं रहना पड़ा। भाई कमरुद्दीन की सहायता से कुछ काम मिलने लगा। बस फिर क्या था, तैयबजी ने अपनी लगन, विषय की पकड़ और सूझ-बूझ के बल पर जल्दी ही पैर जमा लिए। उनकी वकालत चल निकली। यहाँ तक कि बहुत से अँगरेज बैरिस्टर बेकार हो गए। अधिकारियों को इससे बड़ी चिंता हुई। चिंता का दूसरा कारण यह भी था कि उन्हें, भारतीय वकील साम्राज्यवाद के सबसे बड़े शत्रु सिद्ध होंगे, यह आशंका होने लगी थी। बंगाल के तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर सर जार्ज कैंपबेल का विचार था कि वे राजनीतिक आंदोलन के जन्मदाता न भी बने तो भी कम से कम भारतीय जनता के हृदय में स्वाधीनता की ज्योति तो जगा ही सकते हैं। इसी कारण कैंपबेल ने वकीलों और वकालत की प्रथा समाप्त करने का प्रस्ताव रखा जो बाद में पास नहीं हुआ। परंतु कैंपबेल और अँगरेज अधिकारियों की यह आशंका सच निकली। आगे चलकर बंबई (मुंबई) में फीरोज शाह मेहता, तैलंग, कलकत्ता (कोलकाता) में उमेश चंद्र बनर्जी, मनमोहन घोष और लालधन घोष ने राष्ट्रीयता का जितना अधिक प्रचार किया उससे लगता है कि स्वाधीनता के आंदोलन का सूत्रपात वहीं से हुआ। यों तो सन् १८५७ में भी स्वाधीनता संग्राम लड़ा गया था परंतु उस आंदोलन की आग चिनगारी बनकर बुझती जा रही थी। कुछ ही लोगों के मस्तिष्क में यह बात बैठी थी कि इस चिनगारी को फिर से शोला बनाया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जा सकता है। ऐसे ही व्यक्तियों में तैयबजी भी एक थे। उनके स्वाभिमान का आधार भी भारत, भारतीयता और भारतीय संस्कृति ही थे।

८ अक्टूबर १८४४ को बंबई के संपन्न मुसलिम परिवार में उनका जन्म हुआ। एलफिंस्टन स्कूल और कॉलेज में उनकी प्रारंभिक शिक्षा पूरी हुई। अध्ययनशील और परिश्रमी होने के कारण वे लगातार सफल होते गए। स्कूल में उनका ध्यान पाठ्य पुस्तकों पर और ब्लैकबोर्ड की ओर ही रहता था, घर पर भी अन्य कामों और खिलौनों की अपेक्षा उन्हें अपनी पढ़ाई और पुस्तकें अधिक प्यारी लगती थीं। माता-पिता का कुछ प्यार स्वभाववश और कुछ इन विशेषताओं पर रीझने से अधिक ही मिला।

सन् १८६० में वे बैरिस्टरी पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेज दिए गए। वहाँ वे बड़े प्रतिभाशाली और महत्त्वाकांक्षी छात्र सिद्ध हुए। कुछ ही दिनों में अँगरेजी, लैटिन और फ्रेंच भाषाओं पर उनका अच्छा अधिकार हो गया। एक व्याख्यान प्रतियोगिता में उन्हें सर्वप्रथम पुरस्कार भी मिला। वहाँ वे चार वर्ष तक ही रहे होंगे कि उनकी आँखों में कोई रोग हो गया। माता-पिता ने उन्हें बंबई बुला लिया और यहाँ उपचार करवाया।

स्वस्थ होने पर वे पुन: इंग्लैंड चले गए। यों तो तैयबजी ज्यादा कहीं आने-जाने की अपेक्षा अपने अध्ययन कक्ष में ही रहते। फिर भी कभी जब वे थक जाते तो अपने भारतीय मित्रों और इंग्लैंड में रह रहे हिंदुस्तानी परिवारों में मिलने के लिए चले जाया करते थे। दादा भाई नौरोजी भी उस समय इंग्लैंड में ही थे, तैयबजी उनके अच्छे मित्र बन गए। नौरोजी के अतिरिक्त फीरोज शाह मेहता, उमेशचंद्र बनर्जी आदि लोगों के संपर्क में आने से उनके हृदय में देशभक्ति की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भावना पैदा हुई और वे भारत की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं में गहरी दिलचस्पी लेने लगे। सन् १८६७ में बैरिस्टरी पास की और भारत लौट आए। यहाँ उन्होंने भारतीय समाज का भी अध्ययन किया और वकालत के लिए संघर्ष भी।

सन् १८७३ में बंबई कारपोरेशन का पहला चुनाव हो रहा था। तैयबजी भी इस चुनाव में खड़े हुए और जनता ने उन्हें अपना प्रतिनिधि चुन लिया। राजनीतिक क्षेत्र में यह उनका पहला कदम था। वे दस वर्ष तक कारपोरेशन के सदस्य रहे। सन् १८८२ में वे बंबई व्यवस्थापिका के नामजद सदस्य मनोनीत किए गए। वहाँ उन्होंने भारतीय हितों और नागरिक अधिकारों की जोरदार वकालत की। अब वे बंबई से बाहर के लोगों में भी लोकप्रिय होने लगे थे। ज्यों-ज्यों उनका कार्यक्षेत्र बढ़ता गया, मित्रों की संख्या भी बढ़ने लगी। स्वभाव से वे इतने मधुर थे कि एक बार संपर्क में आने वाला व्यक्ति भी उनका बन जाता था। कई लोगों ने उनका अनुसरण किया, उनकी विशेषताओं को आत्मसात कर समाज में अच्छा स्थान बनाया।

उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी—चारित्रिक दृढ़ता। अपने मित्रों के गुणों की प्रशंसा करते हुए उन गुणों को तो स्वयं अपना लेते थे परंतु औरों के दोष-दुर्गुणों से वे अछूते ही रहते। मित्रों की अधिक संख्या होने के कारण उनकी भिन्न-भिन्न आदतें और शौक होना स्वाभाविक था परंतु तैयबजी ने ऐसी कोई आदत नहीं डाली जो उनके चरित्र की दुर्बलता बन सकती थी। वे न शराब पीते थे और न सिगरेट। विलासिता भी उन्हें छू तक नहीं पाई थी। मित्रों ने कई बार आग्रह किया कि वे घुड़दौड़ देखने चलें परंतु उन्होंने हर अवसर पर बड़ी विनम्रता से क्षमा माँग ली। खाली समय में वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी पत्नी को देश-विदेश की खबरें सुनाया करते और ज्ञान-विज्ञान की बातें करते रहते थे।

नियमानुवर्तिता और समय की पाबंदी—ये दो विशिष्टताएँ उनके स्वभाव का प्रमुख अंग थीं। उनकी मान्यता थी कि कोई भी काम नियमपूर्वक किया जाय तो वह ठीक समय पर उचित परिणाम दे देगा। इसके विपरीत अव्यवस्थित ढंग से किया गया काम न तो समय पर पूरा होगा और न ही उसका उचित परिणाम निकलेगा। अपने चरित्र और आदतों से उन्होंने एक ऐसे समय में लोकनायक का इतना अच्छा आदर्श रखा जब देश को इस प्रकार के व्यक्तियों की आवश्यकता थी। कई नेताओं ने तैयबजी के जीवन को अपना आदर्श चुना और उसका ही अनुसरण किया। आज जबकि देश में नेताओं की बाढ़ आई हुई है परंतु उनमें यदि नेतृत्व की विशेषताओं को ढूँढ़ा जाय तो उनका नाममात्र भी उनमें नहीं मिलेगा।

तैयबजी ने शायद उस समय से ही अपने आप को तैयार करना आरंभ कर दिया था, जब इंग्लैंड के विद्यार्थी जीवन में उन्होंने देशभक्ति का पाठ पढ़ा था। उनकी यह तैयारी और व्यक्तित्व का गठन आगे चलकर बड़ा काम आया। कई लोग तो उनकी सादगी, सरलता और निर्व्यसनी जीवन से ही प्रभावित होकर राजनीति के क्षेत्र में आए। संपन्न और समृद्ध होते हुए भी सरल-सादा जीवन जीने का आखिर क्या आनंद है ? अपनी संपदा को देशहित में लगाने का कोई न कोई उद्देश्य तो होगा ही ? प्रभावित व्यक्तियों के मन में इस प्रकार की कई जिज्ञासाएँ उठा करतीं और वे जितना ही उनके बारे में सोचते आत्मोत्सर्ग की भावना उतने ही तीव्र वेग से उनमें जागने लगती।

बंबई (मुंबई) व्यावसायिक परिषद के सदस्य होने से उनकी ख्याति देश भर में फैल गई। परंतु वे अस्वस्थ हो गए और उन्हें इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिषद से त्यागपत्र दे देना पड़ा। तैयबजी के पुन: स्वस्थ हो जाने पर उनकी अध्यक्षता में बांबे प्रेसिडेंसी ऐसोसियेशन गठित की गई। इसी के तत्त्वावधान में इंडियन नेशनल कांग्रेस का पहला अधिवेशन हुआ। तैयबजी अधिवेशन के समय भारत में नहीं थे। दूसरी बार भी ऐसा ही संयोग हुआ। आखिर वे तीसरे वर्ष १८८७ के मद्रास अधिवेशन में सम्मिलित हुए और वहाँ उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। अधिवेशन में देशहित के लिए तैयबजी ने मर्मस्पर्शी भाषण दिया। इस भाषण में भारतीयों की एकता से लेकर आत्मसम्मानपूर्वक जीने की बात कही गई थी।

कांग्रेस का जन्म होते ही सरकार शंकित हो उठी थी। राष्ट्रीय चेतना जाग्रत होने से पहले ही उनकी संभावना को भी कुचलने के लिए अँगरेज सरकार ने फूट के बीज बोना आरंभ कर दिया था हिंदू-मुसलिमों के बीच धार्मिक मतभेद की भावना पैदा कर। वे सन् १८५७ के इतिहास की संभावित पुनरावृत्ति को मिटाना चाहते थे। सरकार का यह षड्यंत्र काफी सफल भी हुआ। सैयद अहमद खाँ जैसे राष्ट्रवादी नेता सांप्रदायिक खेमे में चले गए। तैयबजी का ध्यान भी राष्ट्रीय हितों से हटाकर मुसलिमों के हित में लगाने के लिए अँगरेज अधिकारियों ने बड़े प्रयत्न किए। उनका विचार था कि अकेले इस व्यक्ति को बहला लिया जाए तो भारी खतरा टल जाएगा। लार्ड डफरिन स्वयं सन् १८८७ में बंबई आकर तैयबजी से मिले और कांग्रेस से नाता तोड़ने का परामर्श दिया। इसके लिए उन्होंने जातीय अभिमान की भावना से लेकर प्रलोभन तक दिया। परंतु तैयबजी ने बड़ी दृढ़ता का परिचय दिया और डफरिन से स्पष्ट कह दिया कि मैं आप लोगों का सम्मान करता हूँ, इसका मतलब यह नहीं कि आपकी हर उचित-अनुचित बात को स्वीकार कर लूँ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सरकार के बहकावे में आकर सैयद अहमद खाँ यह प्रचार करने लगे थे कि 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' हिंदुओं की संस्था है और मुसलमान केवल ईसाइयों से ही दोस्ती कर सकते हैं। तैयबजी ने इसका प्रतिवाद किया। सैयद अहमद की प्रेरणा से उन्हीं दिनों कलकत्ता (कोलकाता) की एक मुसलिम संस्था का राजनीतिक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें जाति से मुसलिम होने के नाते तैयबजी को भी उसमें आमंत्रित किया गया। वे संस्था और सैयदजी की गतिविधियों से अच्छी तरह परिचित थे इसलिए सम्मेलन में भाग लेने से इनकार कर दिया। संस्था ने अपने प्रतिनिधि भेजे तो तैयबजी ने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा, "मैं इस सम्मेलन के इरादे को अच्छी तरह जानता हूँ। बिना जाने-बूझे पूरे भारत के सभी नागरिकों को महत्त्व देने वाली संस्था (कांग्रेस) का निराधार विरोध मैं सहन नहीं कर सकता।" परंतु यह सम्मेलन तो मुसलिम राजनीतिक हितों पर विचार-विमर्श करने के लिए आयोजित किया जा रहा है।

तैयबजी बड़े तीखे स्वर में बोले, "सारे देश की जनता जब उत्पीड़न की आग में जल रही हो तो किसी एक वर्ग के हितों की चर्चा करना संकीर्ण और ओछी बात है।"

तैयबजी इस सम्मेलन में किसी भी प्रकार भाग लेने नहीं गए और मुसलिम धर्म के अनुयायियों में अंजुमन ए-इस्लाम के प्रतिनिधि की हैसियत से उन्होंने एक वक्तव्य प्रसारित किया, "भारत की विभिन्न जातियों के संबंध ऐसे नहीं है कि किसी भी जाति के नेता अन्य जातियों के नेताओं से अलग रहकर काम करें। मेरा विचार है कि हमें अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए मिल-जुलकर प्रयत्न करना चाहिए। इससे जल्दी सफलता मिलेगी।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सन् १८९२ में उनका स्वास्थ्य फिर बिगड़ा और वे जलवायु परिवर्तन के लिए नीलगिरि और दार्जिलिंग जाने लगे। स्वास्थ्य सुधार में लगभग डेढ़ वर्ष लगा। सरकार ने उनके सामने न्यायाधीश बनने का प्रस्ताव रखा। शासकीय नीतियों से अप्रभावित रहकर अपने काम को निष्पक्ष रहकर करने में वे बड़े माहिर थे। सरकार ने समझा था कि तैयबजी इसे उपकार समझेंगे और उनसे दबने लगेंगे परंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ। सन् १८९५ से ही, जब उन्होंने न्यायाधीश का पद सँभाला, उनकी ख्याति निष्पक्ष न्यायाधीश के रूप में फैलने लगी।

जून १८९७ में रैंड नामक एक अँगरेज की हत्या कर दी गई। हत्या का आरोप लगाया गया बाल गंगाधर तिलक पर क्योंकि वे शिवाजी मेला लगाने गए थे तथा एक बार उन्होंने शिवाजी द्वारा अफजल खाँ की हत्या को भी उचित और न्यायपूर्ण कहा था। इस ऐतिहासिक घटना पर 'केसरी' पत्रिका में उन्होंने लेख भी छपवाया था। इन आधारों पर हत्या का आरोप लगाकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। तिलक के प्रशंसकों ने उनकी जमानत की अरजी दी जो खारिज कर दी गई। ऐसा दो बार हुआ। तीसरी बार सरकार ने तैयबजी की अध्यक्षता में सुनवाई आरंभ की। एक ओर तो वे निष्पक्ष न्यायाधीश के रूप में विख्यात थे दूसरी ओर उन पर दबाव डाला जा रहा था कि वे जमानत मंजूर न करें और तिलक पर मुकदमा चलने दें। बदरुद्दीन जी ने इस दबाव की परवाह नहीं की और दोनों पक्षों के तर्क-वितर्क सुने। उन्होंने फैसला दिया, "मेरा विचार है कि तिलक की जमानत मंजूर करने में कोई कानूनी बाधा नहीं है क्योंकि संभव है, वे महीने भर बाद ही निर्दोष सिद्ध हो जाएँ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस निर्णय से प्रशासनिक क्षेत्र में बड़ी खलबली मची परंतु तैयबजी की धाक और लोकप्रियता इतनी फैल चुकी थी कि सरकार उनके विपक्ष में कोई भी राय तक नहीं दे सकती थी। अपने देश में अपनी ही प्रतिभा और योग्यता के बल पर विदेशी सरकार का एक अंग रहते हुए भी उसकी नीतियों और इरादों पर प्रहार करने का ऐसा उदाहरण विश्व भर में कहीं नहीं मिलता और मजा यह है कि सरकार सब कुछ करने में समर्थ होते हुए भी कुछ न कर सकी।

तैयबजी ११ वर्षों तक जज बने रहे। परंतु उन्होंने समाज सेवा से कभी मुँह नहीं मोड़ा और कांग्रेस के काम में भी पूर्ववत भाग लेते रहे। अगस्त १९०६ में लंदन में हृदयगति रुक जाने से उनका अचानक देहांत हो गया। उन्होंने देशभक्ति और आत्माभिमान की जो गंगा प्रवाहित की वही आगे चलकर स्वतंत्रता की जननी सिद्ध हुई।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक अपराजेय देशभक्त
खान अब्दुल गफ्फार खाँ

विवेकवान वे ही व्यक्ति कहे जाते हैं जो समझ में आ जाने पर ठीक बात को एक बार में ग्रहण कर सदा-सर्वदा के लिए गाँठ बाँध लेते हैं और गलत बात को सदा-सर्वदा के लिए त्याग देते हैं। सरहदी गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ उन्हीं विवेकवान व्यक्तियों में से हैं।

गरम खून वाली उस पठान जाति में जन्म लेकर भी, जिसके शब्दकोश में अहिंसा का बोधक कोई शब्द कभी नहीं रहा हो और जो सदा से शक्ति और शस्त्र में ही विश्वास रखने वाली रही हो, अहिंसा का पुजारी बन जाना आश्चर्य की बात है। खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने जिस दिन से महात्मा गांधी के संपर्क में रहकर शांति और अहिंसा की महत्ता समझी उस दिन से सदा-सर्वदा के लिए एक शांत संत की तरह अहिंसावादी बन गए और उस व्रत-भंग की हजारों परिस्थितियाँ आने पर भी अपने सिद्धांत पर अचल और अडिग बने रहे।

खान अब्दुल गफ्फार खाँ का जन्म उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत के एक संपन्न पठान परिवार में जनवरी १८९० को हुआ था। इनके पिता पेशावर के निकट उत्यानजई गाँव के जमींदार थे और क्षेत्र में उनका बहुत प्रभाव था। सीमा प्रांत का यह पठान-परिवार प्रारंभ में साम्राज्यवादियों का अनुयायी था। किंतु जब देश की स्वाधीनता का आंदोलन छिड़ा और महात्मा गांधी का नया राजनीतिक दर्शन प्रकाश में आया तो यह परिवार भी सत्य को स्वीकार किए बिना न रह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सका। पूरे परिवार ने अन्यायप्रिय साम्राज्यवादियों का साथ छोड़ दिया और स्वदेश-स्वाधीनता के झंडे के नीचे आ गया और एक बार आकर फिर जीवन भर स्वाधीनता संग्राम के सैनिक बनकर विदेशी ताकतों का उत्पीड़न सहन करते रहे। उन्होंने देशभक्ति की वेदी पर अपनी जागीर, स्वाधीनता, सुख-सुविधा और सारी संपत्ति बलिदान कर दी तथा फकीरी धारण कर जेल और जुल्म सहने का स्वाद लेते रहे।

इसी परिवार के पुत्ररत्न खान अब्दुल गफ्फार खाँ देश के लिए विनम्रता, शांतिप्रियता और अहिंसा का परिचय देते हुए शासकों का अपमान और अवहेलना सहना अपना कर्त्तव्य समझते रहे। वे कितने स्वाभिमानी और सहनशील थे, इसका पता इस एक ही बात से चल जाता है।

उत्यानजई से मिडिल की परीक्षा पास करने के बाद खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने मिलिटरी में जाने का निश्चय किया। उन्होंने अपना पूरा परिचय लिखकर प्रार्थना पत्र भेजा और वे तुरंत बुला लिए गए। नाप-जोख और तौल में अनफिट होने का प्रश्न ही नहीं था। अंतिम डॉक्टरी जाँच में भेज दिए गए। वहाँ वे अपनी बारी आने की प्रतीक्षा में धैयपूर्वक बैठे थे कि तब तक एक अँगरेज अफसर ने एक हिंदुस्तानी सिपाही से कुछ अपमानजनक व्यवहार कर दिया। बस युवक गफ्फार खाँ का स्वाभिमान जाग उठा और वे उस अफसर पर एक हिंदुस्तानी होने के नाते टूट पड़ने को तैयार हो गए। किंतु कुछ लोगों ने बीच में पड़कर मामला वहीं रोक दिया। खान अब्दुल गफ्फार खाँ का मन मिलिटरी की नौकरी से फिर गया और वे घर वापस चले आए। इसी स्वाभिमानी पठान युवक ने जब सत्य, शांति और अहिंसा की महत्ता हृदयंगम कर ली तो उसके निर्वाह में महात्मा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गांधी की समकक्षता में जा पहुँचे। संसार में सिद्धांत-शूर और व्रतवंत व्यक्ति ऐसे ही धीर पुरुष कहलाते हैं।

मिलिटरी की नौकरी से इनकार कर देने पर इनके पिता ने इंजीनियरिंग पढ़ने के लिए विलायत भेजने का निश्चय किया। इस पर माता ने विरोध करते हुए कहा कि मेरा बड़ा लड़का तो विलायत जाकर हाथ से निकल गया, अब मैं इस एक लड़के को भी उस रास्ते कदापि न जाने दूँगी। अत: उनका इंग्लैंड जाना स्थगित हो गया।

यद्यपि खान अब्दुल गफ्फार खाँ एक जागीरदार के बेटे थे, घर में किसी बात की कमी न थी, धन-संपत्ति, जमीन-जायदाद और मान-सम्मान सब कुछ था, चाहते तो घर बैठकर ऐशोआराम की जिंदगी बिता सकते थे किंतु उन्हें घर बैठकर खाना-पीना और मौज उड़ाना पसंद न आया। वे कुछ ऐसा काम करना चाहते थे जिससे वे व्यस्त भी बने रहें और जनता का कुछ हित भी होता रहे। अत: वे पेशावर के एक मकतब में चले गए और वहाँ कुरान एवं हदीस आदि धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन-अध्यापन करने लगे।

कुछ समय तक मकतब की सेवा करने के बाद वे फिर अलीगढ़ आकर उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय में भरती हो गए। अलीगढ़ विश्वविद्यालय उन दिनों मुसलमानों में सांप्रदायिकता भरने का एक बड़ा केंद्र बना हुआ था। जब विश्वविद्यालय के कट्टरपंथी और सांप्रदायिक विष से विकृत मुसलमान नवयुवकों ने अपने बीच एक सरहदी पठान नौजवान को आया देखा तो बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने सोचा, ''इसको सांप्रदायिक विष से भरकर इसे सरहदी सूबे में सांप्रदायिकता फैलाने का यंत्र बनाना चाहिए।'' अस्तु, उन्होंने खान से वैसी बातें करनी और पाकिस्तान का स्वप्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिखलाना शुरू कर दिया। किंतु उस सच्चे मनुष्य पर देशद्रोह का रंग न चढ़ सका। उसकी समझ में बिलकुल न आया कि आखिर यह सब लोग हिंदू और मुसलमानों के बीच दुश्मनी तथा देश विभाजन में किस हित का स्वप्न देखते हैं ? उसे उनके विचार देशद्रोह से दूषित लगे और उसने उन सबका साथ छोड़ दिया तथापि उसके मस्तिष्क में राजनीति के बीज पड़ चुके थे।

खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने अलीगढ़ में रहते हुए मौलाना आजाद का अखबार 'अलहिलाल' पढ़ना शुरू किया। उन्हें इस अखबार की विचारधारा ठीक मालूम दी और वे उन्हीं विचारों में दीक्षित होते चले गए। अध्ययन, अनुभव, मनन और देश की आवश्यकता तथा विदेशियों की नीति देखकर खान अब्दुल गफ्फार खाँ के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना जाग उठी और वे स्वदेश की स्वाधीनता के लिए कुछ करने के लिए उत्सुक होकर वापस चले आए।

राष्ट्रीय प्रकाश लेकर सन् १९११ में घर आने पर उन्होंने राजनीति के नाम पर सोती हुई पठान जाति को जगाना शुरू कर दिया। उन्हें इस बात पर बड़ी लज्जा आई कि साहस तथा वीरता की धनी पठान जाति देश की स्वाधीनता के लिए कुछ न करती हुई और मोह निद्रा में सोती हुई अँगरेजों के जाल में फँसी हुई है।

सरहदी पठानों में जागरण लाने के लिए उन्होंने जो सबसे पहला काम किया था, वह था—शिक्षा-प्रसार। खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने न केवल स्थान-स्थान पर स्कूल ही स्थापित कराए बल्कि स्वयं भी पाठशालाएँ लगाते थे और उनमें अक्षरज्ञान देने के साथ-साथ राष्ट्रीय शिक्षा भी देते थे। आठ साल के अविराम परिश्रम के बाद उन्होंने पठानों के बीच जाग्रति पैदा कर दी और उन्हें इस योग्य बना दिया कि वे स्वाधीनता, अपने अधिकार और देश व समाज के प्रति अपना कर्त्तव्य समझ सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सन् १९१९ में जब गांधी जी का आह्वान गूँजा और देशभर में स्वतंत्रता का आंदोलन चल पड़ा तब खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने सरहदी पठानों को उठाया और लाखों जनसमूह के बीच विदेशी सरकार की कड़ी आलोचना की। उसी सभा में उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में पठानों को मर-मिटने का निमंत्रण दिया। उनका आमंत्रण पाकर पठान संगठित हो उठे और सरहद पर स्वतंत्रता का सिंहनाद गूँजने लगा।

अँगरेजों के लिए यह एक नया अनुभव था। उन्हें स्वप्न में भी विश्वास न था कि उनकी नीति के जादू से बँधे सीमांत प्रदेश के पठान भी भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में सम्मिलित हो सकते हैं। उन्होंने सरहदी विद्रोह का मुख्य हेतु खान अब्दुल गफ्फार खाँ को समझा और उन्हें गिरफ्तार कराकर जेल में डलवा दिया। खान अब्दुल गफ्फार खाँ के व्यक्तित्व से सरकार इतनी डर गई कि उसने इस नरसिंह को बाँधने के लिए एक विशेष प्रकार की हथकड़ी-बेड़ियाँ बनवाई थीं।

खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने जेल-जीवन का समय यों ही पड़े-पड़े नहीं खो दिया। उन्होंने इसका पूरा-पूरा लाभ उठाया और उसका उपयोग गीता तथा बाइबिल के गहन अध्ययन में किया। इसके अतिरिक्त महात्मा गांधी की आत्मकथा और उनके राजनीतिक दर्शन का भी गूढ़ अध्ययन किया। निष्पक्ष तथा निर्विघ्न अध्ययन से उन्हें इन सद्ग्रंथों का सारतत्त्व हृदयंगम हो गया और वे अब वास्तविक रूप से सत्य, शांति, अहिंसा और प्रेम के अनुयायी बन गए तथा एक बार ग्रहण करने के बाद फिर उसे जीवन भर नहीं छोड़ा।

जेल से छूटने के बाद वे फिर देश और समाज की सेवा में लग गए। 'चारसद्दा आश्रम' और 'खुदाई खिदमतगार' नाम के दो आश्रम उन्होंने चलाए। यह आश्रम बहुत मानों में भारतीय आश्रम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जैसे थे। इनमें सूत कातने का कार्य तो नियमित रूप से चलता ही था, साथ ही नित्य ईश्वर प्रार्थना और राष्ट्रीय शिक्षा का आयोजन भी होता था। सत्य, अहिंसा और शांति का नियमित पाठ इस आश्रम में पढ़ाया जाता था। साधारण शिक्षा भी दी जाती थी, जिसे पाकर शिक्षार्थी जीवन में स्वावलंबी बनकर, सम्मानपूर्वक अपनी आजीविका कमा सकें। यह आश्रम पठानों का वास्तविक भारतीयकरण करने का एक सार्थक केंद्र था।

'खुदाई खिदमतगार' नाम का संगठन और कुछ नहीं था, देश तथा समाज के सेवकों का एक संगठन था। इसके स्वयंसेवक खान अब्दुल गफ्फार खाँ के नेतृत्व में देश के अहिंसात्मक आंदोलनों में तो भाग लेते ही थे, आवश्यकता पड़ने पर पीड़ितों तथा दुखी लोगों की सहायता भी करते थे।

सरहद की इन दोनों संस्थाओं ने वहाँ पर विदेशी शासन के विरुद्ध एक प्रचंड वातावरण तैयार किया जिससे उस महत्त्वपूर्ण स्थान से अँगरेजों के पैर उखड़ने लगे। अस्तु, सरकारी कूटनीतिज्ञों ने लीगी नेताओं को खान अब्दुल गफ्फार खाँ को सच्ची राष्ट्रभक्ति से विरत करने की प्रेरणा दी। लीग के बड़े-बड़े नेताओं ने उनसे संपर्क स्थापित किया। उन्हें पाकिस्तान बनने के फायदे दिखलाए, इस्लाम और मुसलमानियत का वास्ता दिया और यहाँ तक कहा कि वे हिंदुओं के संगठन कांग्रेस का साथ छोड़कर लीग में शामिल होकर पाकिस्तान बनवाने में सहायता करें तो पाकिस्तान सरकार का सर्वोच्च पद जीवन भर के लिए उन्हें दे देंगे और यदि चाहेंगे तो उनका राज्य ही स्वतंत्र रूप से पृथक बनवा देंगे। किंतु सिद्धांत तथा सत्य के धनी खान अब्दुल गफ्फार खाँ उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में नहीं आए और सच्चे मन से भारत माता की सेवा में लगे रहे। इस आराधना के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए उन्हें काफिर, गैर-मुसलिम और इस्लाम का शत्रु भी कहा गया और तरह-तरह से अपमानित तथा लांछित किया गया, किंतु वे अपने व्रत से जरा भी विचलित न हुए। सरकार ने उनकी सारी जमीन, संपत्ति तथा जीवन के साधन छीन लिए पर उन्हें न विचलित होना था और न वे विचलित हुए।

सन् १९२१ के असहयोग आंदोलन से तो उनका जीवन जेल में ही कटने लगा। जेल में उन्हें तरह-तरह के त्रास और यातनाएँ दी गईं। उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। बहुत बार उन्हें अनशन करना पड़ा किंतु जिस महान पथ पर वे अपना चरण बढ़ा चुके थे उससे तिल भर पीछे हटना उन्होंने सीखा ही न था। राजनीतिक दुर्भाग्य से पाकिस्तान बन गया और खान अब्दुल गफ्फार खाँ की कर्मभूमि सीमांत प्रदेश पाकिस्तान में चली गई। पाकिस्तान बन जाने पर वहाँ की सरकार ने पुनः पदों का लालच देकर उन्हें व्रतच्युत करना चाहा। किंतु उन्होंने पाकिस्तान को मान्यता प्रदान न की और पख्तूनों की मातृभूमि सीमांत प्रदेश को पाकिस्तान से स्वतंत्र कराने के लिए संघर्ष करना शुरू कर दिया। यदि वे चाहते तो सिद्धांत की कीमत पर पाकिस्तान के साथ होकर वहाँ की सरकार में मनमाना पद ले सकते थे अथवा भारत में स्थानांतरण कर जेल व जुल्म से तो बच ही सकते थे, साथ ही जहाँ स्वतंत्रता के बाद भारत के अवसरवादियों ने दोनों हाथ लाभ लूटे हैं, वे भी उच्च से उच्च पद पा सकते थे। किंतु जिसका जीवन ही सत्य के लिए संघर्ष करते रहने के लिए समर्पित रहा, जो समाज तथा देश की सेवा के लिए जीवित रहा, वह प्रलोभनों को क्या महत्त्व दे सकता था?

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय संस्कृति के सेवक जहूरबख्श

पुत्री का विवाह सानंद संपन्न हुआ, संबंधी-मेहमानों ने अपनी-अपनी रुचि के अनेक उपहार दिए। तभी सबके सामने आए एक हट्टे-कट्टे, बड़ी-बड़ी मूँछों वाले सज्जन। लोगों की आँखें चमक उठीं। वे कोई अमूल्य उपहार देंगे, इस आशा से सबकी आँखें उन पर जम गईं। यह सज्जन कन्या के पिताजी थे।

उपहार कन्या के हाथ में दिया गया तो बराती-घराती सभी चौंक उठे। पिता ने समझाया, "बेटी! रामायण इस देश की सांस्कृतिक विरासत है, तुझे रामायण देकर आज मैं अपने आप को गौरवान्वित अनुभव करता हूँ और कामना करता हूँ कि तू सीता जैसे आदर्शों वाली नारी बने।"

रामायण की भेंट पर चौंकने वाली बात इसलिए हुई क्योंकि यह विवाह एक मुसलमान कन्या का था। बराती मुसलमान थे और कन्या का पिता भी। जन्म से मुसलमान होते हुए भी यह विशुद्ध भारतीय आत्मा आजीवन अपने आप को भारतीय संस्कृति का अंग मानती रही। उनका कहना था कि दुनिया में कोई धर्म, संस्कृति यदि मानवीय संस्कृति और एकता का स्थान ले सकती है तो वह भारतीय संस्कृति ही होगी क्योंकि उसमें जीव मात्र के अभ्युदय के लिए स्थान है।

यह थे स्वर्गीय श्री जहूरबख्श। जहूरबख्श मध्यप्रदेश के जबलपुर नामक नगर में निवास करते थे। यह स्थान सांप्रदायिकता पीड़ित क्षेत्र है। अनेक हिंदू तथा मुसलमान अपनी इस संकीर्णता के कारण ही यहाँ भिड़ चुके हैं, सांप्रदायिक दंगों को जन्म दे चुके हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्री जहूरबख्श इसके अपवाद थे। उनका कहना था, "मेरा निर्माण इस देश की पवित्र मिट्टी में हुआ, मेरे कानों में इसके पुण्य गीत गूँजे, इसकी मिट्टी में मैं खेला। इस देश के प्रति मेरी श्रद्धा का कारण इतना ही नहीं वरन इसके वह आदर्श हैं, जिनकी समता मुझे दुनिया की किसी भी संस्कृति में दिखाई नहीं दी। कौन है जो जीव-जंतुओं में भी अपनी ही आत्मा का दर्शन करता हो। अपने ही उत्थान की शिक्षा सब देते हैं, पर यह भारतीय संस्कृति है जिसने अपनी सारी शक्ति पुण्य और परोपकार में लगाई है। यही वह संस्कृति है जो शांति और समता का पाठ पढ़ाती है, आने वाले समय पर दुनिया में यदि किसी को सर्वोपरि प्राथमिकता मिलेगी तो वह भारतीय संस्कृति ही होगी।"

वास्तव में भारतीय दर्शन के प्रति ऐसी स्पष्ट सहानुभूति कोई विचारशील व्यक्ति ही रख सकता है। सचमुच जहूरबख्श विचारशील व्यक्ति थे। अपनी बुद्धि पर जोर लगाकर परिस्थितियों का विवेचन करने वाला ही निष्पक्ष समीक्षाएँ प्रस्तुत कर सकता है। पूर्वाग्रह, चाहे वह मान्यताओं के संबंध में हो अथवा परंपराओं या रीति-रिवाजों के प्रति हो, सदैव दु:खदायक ही होता है। मुसलमान होते हुए भी दादा जहूरबख्श इस पाप से मुक्त थे। मुक्त ही नहीं थे वरन अपना कार्यक्षेत्र उन्होंने इस प्रकार चुना कि वे इस बात के आदर्श भी बन गए।

अर्थात उन्होंने पैसे का मोह ताक पर रखकर पैतृक धंधे की ओर ध्यान नहीं दिया। कुरसी और पद-प्रतिष्ठा का मोह भी उन्हें छू नहीं पाया। यह मसले ऐसे हैं जो लोगों को धन दे सकते हैं, थोड़ी भौतिक सुख-सुविधाएँ प्रदान कर सकते हैं किंतु उनसे व्यक्तित्व में जो गरमी और प्रकाश आना चाहिए, वह नहीं आ पाता। प्रतिभा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विकास सदैव लीक से हटकर चलने में होता है। श्री जहूरबख्श ने इसी का अनुसरण किया। उस समय हिंदी पत्रकारिता का न कोई भूत था, न भविष्य, न उससे पेट पालन हो पाता और न सामान्य सुविधाओं की प्राप्ति। फिर भी श्री जहूरबख्श ने पत्रकारिता का जीवन चुना और आजीवन राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा करते रहे।

पत्रकारिता एक बात है और उसकी साधना दूसरी बात। श्री जहूरबख्श ने वस्तुतः पत्रकारिता नहीं, साहित्य साधना की। इस अंतर को आज की परिस्थितियों में स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है। आदर्श कही जाने वाली पत्रिकाएँ विज्ञापनों से भरी होती हैं और उन विज्ञापनों से जो सामान्य जनता का अहित करती हैं, किंतु ऐसी पत्रिकाओं वाले भी पत्रकार कहलाते हैं। पत्रकार का उद्देश्य पाठक की बौद्धिक प्रतिभा को प्रखर बनाना और उनमें आत्म-ओज जाग्रत करना होना चाहिए। पर जब उनकी कलम व्यक्तियों की चारणता तथा कुत्सित उत्तेजना और वासना भड़काने वाला साहित्य लिखने लगती है तो बुद्धि विकास के स्थान पर आत्मा का पतन होने लगता है। कितने ही पत्रकार प्रगतिशीलता के नाम पर उथली छींटा-कसी को ही पत्रकारिता मानते हैं। जीवन के गंभीर अध्ययन और निष्कर्षों से उन्हें क्या मतलब? उन्हें तो जनता के मानसिक बहाव को और तेज बनाकर अपना उल्लू सीधा करना अभीष्ट होता है। सो पत्रकारिता के नाम पर आज यही सब कुछ हो रहा है। जहूरबख्श इसके अपवाद थे।

उन्हें प्रकाशकों ने प्रकाशन की रोयल्टी नहीं दी, उलटे कई बार तो खोटी-खरी भी सुनाई। संपादकों ने पारिश्रमिक नहीं दिया अलबत्ता लेख माँग-माँगकर छापे। इतने पर भी उन्हें किसी प्रकार की शिकायत नहीं हुई। तुलसीदास जी ने रामायण, प्रचार और अर्थोपार्जन के लिए नहीं लिखी थी। '**स्वांतः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा**' अर्थात तुलसी ने रघुनाथ कथा आत्मसुख के लिए लिखी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और वह अमर हो गई। जहूरबख्श भी इन सब कठिनाइयों के बावजूद अपनी सेवा और अपना कर्त्तव्य मानकर लिखते रहे तथा उस सम्मान के अधिकारी बन गए जो प्राय: हर किसी को नहीं मिला करता। जब उनका निधन हुआ तब उनकी पुण्य स्मृति में देशभर के अखबारों ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की।

सुख-सुविधाओं की तरह कष्ट-कठिनाइयाँ भी जीवन का अनिवार्य अंग हैं। अनिवार्य ही नहीं वह जीवन की आवश्यकताएँ भी हैं। यदि कठिनाइयाँ न बनाई गई होतीं तो पात्रत्व की परीक्षा तथा व्यक्तित्व का विकास सदैव अधूरा ही पड़ा रहता। जिसके जीवन में कठिनाइयाँ नहीं आईं उसकी तेजस्विता धूमिल हुई समझना चाहिए। इसीलिए आत्मदर्शी जान-बूझकर कठिनाइयों का वरण करते हैं, जहूरबख्श के जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आए पर उनकी जीवन-नौका ने अपनी यात्रा नहीं रोकी। उन पर सांप्रदायिक व्यक्ति होने का आरोप लगाया गया तो उन्होंने हँसकर इतना ही कहा, "मेरे शरीर का जो भी कुछ रस, रक्त, मांस है, वह भारतीय अन्न-जल से बना है, मुझे जिंदा रहना है तो इसी भूमि में और गीत गाना है तो इसी धरती के।" एक बार धर्मोन्मादी व्यक्तियों ने औरों के साथ उनका भी घर जला दिया और सारी संपत्ति खाक कर दी, उन्हें जबरदस्त आर्थिक-यातना का सामना करना पड़ा, पर वे उससे जरा भी विचलित नहीं हुए। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक बनकर उन्होंने नए सिरे से जीवन जीना प्रारंभ कर दिया पर उन्होंने किसी को अभिशाप नहीं दिया। इससे उनका आत्मतेज ही विकसित हुआ। सचाई खरी उतरी और इस साधना का ही प्रतिफल है कि वे आज सारे देश की श्रद्धास्पद विभूति बन गए।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सांप्रदायिकता के कट्टर विरोधी मौलाना मजहरुलहक

"हिंदू और मुसलमान एक ही डाल के दो फूल हैं, एक ही माता की दो आँखें हैं"—इस असांप्रदायिक कथन को कहने और उसे अपने जीवन एवं कार्यों में चरितार्थ कर दिखाने वाले मौलाना मजहरुलहक का जन्म पटना जिले के मनेर थाने के अंतर्गत ब्रह्मपुरा ग्राम में २२ दिसंबर सन् १८६६ को हुआ था।

हक साहब भारत के एक सच्चे और आदर्श मुसलमान थे। देश का सांप्रदायिक विष दूर करने में उन्होंने अपना बहुमूल्य जीवन लगा दिया। वे कांग्रेस के एक सच्चे और लगनशील कार्यकर्त्ता थे। राजनीतिक कार्यों की गणना में मौलाना हक का हिंदू-मुसलिम एकता संबंधी कार्य सबसे महत्त्वपूर्ण है। वे जिस स्थान पर किसी सभा में जाते थे, अपने भाषणों का एक ही विषय रखते थे—'सांप्रदायिकता का विरोध और हिंदू-मुसलिम एकता का समर्थन।'

वे जब कहीं भी हिंदू-मुसलिम झगड़े की बात सुनते थे, घंटों बैठे आँसू बहाते रहते थे। जहाँ जाकर उस तनाव को खतम करने के लिए अवसर होता था, मौलाना हक हजार काम छोड़कर जाते थे। वे हिंदू-मुसलमानों को सांप्रदायिक वैमनस्य की हानियाँ और एकता के लाभ बतलाते थे। वे कहा करते कि हम हिंदू हों या मुसलमान, हम सब एक ही नाव के यात्री हैं। डूबेंगे तो साथ और पार निकलेंगे तो साथ।

अपने इस सांप्रदायिक एकता का संदेश वहन करने में उनको एक नहीं अनेक बार प्राणों का संकट उठाना पड़ा। सांप्रदायिक लोगों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने उन्हें अनेक बार मार डालने का षड्यंत्र किया। उनकी सभाओं में ईंट और पत्थर फेंके और तरह-तरह के उपद्रव किए। फिर भी श्री हक अपने पवित्र कर्त्तव्य से तिल भर भी विचलित न हुए। सच्चे कर्त्तव्यनिष्ठ जिस सद्सिद्धांत को विवेकपूर्वक स्वीकार कर लिया करते हैं और जिसका जनता में प्रचार करने का बीड़ा उठा लेते हैं, फिर वे एक क्या हजार संकट आने पर भी अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होते। श्री मजहरुलहक ऐसी ही दृढ़ निष्ठा वाले व्यक्ति थे।

अनेक बार सांप्रदायिक पागलों ने उन्हें रास्तों में घेरा और मार डालने की धमकी दी और चाहा कि वे इस बात का वचन दें कि हिंदू-मुसलमान एकता के लिए प्रयत्न नहीं करेंगे। कोई सिद्धांत का कच्चा और कायर व्यक्ति होता तो अवश्य ही गुंडों के खुले छुरों की नोंक के सामने अपने को परिस्थिति से बचाने के लिए वैसा न करने का वचन दे देता। किंतु उन्होंने अपने जीवन सिद्धांत के विपरीत उस समय भी अपने मुख से कुछ कहना तक पाप समझा और साहसपूर्वक कह दिया, "आप लोगों की धमकी और छुरे की नोकें मुझे मेरे सिद्धांत के खिलाफ बुलवा नहीं सकती। जिस बात को मैं ठीक समझता हूँ और जो वास्तविक रूप से हर तरह ठीक है, उसके विरुद्ध कदापि नहीं बोल सकता। मैं जानता हूँ कि आप लोग बहकाने में हैं, गलती पर हैं, जीवन की वास्तविकता से दूर हैं, इसलिए ऐसा काम कर रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि जब तुम लोग शांतचित्त होकर मेरे कहने और अपने करने पर विचार करोगे तो तुम्हें अपनी भूल पता चल जाएगी। हिंदू और मुसलमान एक ही डाल के दो फूल हैं। एक ही माँ की दो आँखें हैं।"

"हमको फिरंगी सरकार आपस में लड़वाकर अपने पैर भारत में जमाए रखना चाहती है। हिंदू और मुसलमान दो सगे भाइयों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तरह हैं। आपस में लड़ना इनको किसी तरह भी शोभा नहीं देता। इससे अपना देश कमजोर होता है और दुश्मन की ताकत बढ़ती है। आप लोग मौत के डर से मुझसे कोई गलत बात नहीं करा सकते। अगर मुझे मार भी डालो तो भी मेरी रूह हिंदू-मुसलिम एकता का नेक काम करने के लिए लोगों को प्रेरणा देती रहेगी। मेरे विचार, मेरे इरादे दूसरों के दिल और दिमाग में बसकर मेरा काम आगे बढ़वाएँगे। मुझे मरने से जरा भी डर नहीं है। किसी अच्छे काम में जान दे देने से बढ़कर नेक और ऊँची मौत क्या हो सकती है?''

मौलाना हक के इस प्रकार के तेजस्वी विचार सुनकर और उनके मुख पर सत्य, साहस तथा भलाई का प्रकाश देखकर सांप्रदायिक गुर्गों को उन्हें हानि पहुँचाने का साहस न हुआ और वे दुम दबाकर भाग गए। ऐसे थे अपने सिद्धांत और विचारों के दृढ़व्रती मौलाना मजहरुलहक।

सांप्रदायिक लब्धकों ने मौलाना हक को अपने मार्ग से विचलित करने के लिए न केवल भय और आतंक का ही प्रयोग किया बल्कि लोभ और मोह का भी प्रयोग किया। अनेक मुसलिम सांप्रदायिक नेता और रईस उनके पास आए और उन्हें पूरे मुसलमान संप्रदाय का नेतृत्व सौंप देने का प्रलोभन दिया और कहा, ''आप मुसलमानों को हिंदुओं से बिलकुल अलग कर लीजिए और कांग्रेस को छोड़कर लीग में आ जाइए। हम आपको अपने लोगों के संगठन में सर्वोच्च पद देंगे।''

श्री हक ने उनका विष से भरा सांप्रदायिक प्रस्ताव सुना और मन ही मन उनके विचारों एवं इरादों पर तरस खाते हुए अंतरात्मा से उनकी सद्बुद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए बोले, ''देश की भलाई के लिए हिंदू और मुसलमानों का मिलकर रहना जरूरी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस तरह की नफरत को बढ़ाने से अँगरेजों के पैर और मजबूत होंगे।''

''आप मुझे पद और अधिकार देने की जो बात कहते हैं, उसकी बावत आपको साफ बता दूँ कि मुझे न किसी पद की जरूरत है और न किन्हीं अधिकारों की तमन्ना। मैं तो एक खाकसार की तरह देश और कौम की खिदमत करना चाहता हूँ। वह कर रहा हूँ और आगे भी जीवन भर करता रहूँगा। जो राहत और आनंद देश एवं जनता की सेवा करने में है, वह हुकूमत और हकूकों में कहाँ? मैं फिर कहूँगा कि आप लोग गुमराह हैं।''

मौलाना हक की यह स्पष्ट और अडिग चरित्रनिष्ठा देखकर सारे सांप्रदायिक लब्धकों का मुँह उतर गया और फिर आगे उनसे कोई उत्तर नहीं बन पड़ा।

श्री हक केवल राजनीतिक दृष्टि से ही हिंदू और मुसलिम एकता का प्रचार नहीं करते थे, बल्कि वे सदा-सर्वदा के लिए भारत से हिंदू और मुसलमानों का सांप्रदायिक विष मिटा देने के लिए ठोस काम भी करते थे। इसके लिए उन्होंने पटना में एक 'सदाकत आश्रम' की स्थापना की। उस आश्रम में हिंदू और मुसलमान सभी छात्रों को भरती किया जाता था और उन्हें राष्ट्रीय भावनाओं की ऐसी शिक्षा दी जाती थी कि उनके हृदयों से सांप्रदायिकता का विष सदा-सर्वदा के लिए दूर हो जाता था। इस प्रकार उन्होंने भारत में असांप्रदायिक पीढ़ी का निर्माण करने का प्रयत्न किया। वे आश्रम के नियमों के कितने पक्के थे, यह इस एक घटना से ही प्रकट हो जाता है।

उनके 'सदाकत आश्रम' में मुहम्मद खलील नाम का एक मुसलमान लड़का पढ़ता था। वह लड़का पढ़ने-लिखने में इतना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तेज और विनम्र था कि आश्रम की शोभा और शान कहा जाता था। श्री हक साहब उससे बड़ा स्नेह करते थे। किंतु एक दिन बातों-बातों में उसने कुछ सांप्रदायिक उद्‌गार अन्य विद्यार्थियों के सम्मुख प्रकट कर दिया। पता चलने पर श्री हक ने उस लड़के को तुरंत निकाल दिया और साफ कह दिया, "मैंने जिस बात को जीवन का उद्‌देश्य बनाया है और जिसके लिए फकीरी ले ली है, इसने उसी पर चोट की है। ऐसे लड़के आश्रम में नहीं रह सकते।"

इसी प्रकार एक बार सारन जिले में फरीदपुर ग्राम के निकट बकरीद पर कुछ मुसलमानों ने कुरबानी के लिए गोहत्या की योजना बनाई, इससे उस क्षेत्र में सांप्रदायिक तनाव पैदा हो गया। श्री हक वहाँ गए और मुसलमानों को गोहत्या न करने के लिए समझाया। जब वह न माने तो उन्होंने उसके विरोध में आमरण अनशन शुरू कर देने का निश्चय किया। ऐसी दशा में मुसलमानों को उनकी बात माननी पड़ी और गोवध का विचार त्याग दिया।

इस प्रकार जीवन भर हिंदू-मुसलिम एकता का प्रयत्न करते हुए मौलाना मजहरुलहक २ जनवरी १९३० में स्वर्ग सिधार गए। उनकी मृत्यु पर महात्मा गांधी ने कहा था, "आज भारत में हिंदू-मुसलिम एकता का सच्चा हिमायती उठ गया। उनकी क्षतिपूर्ति होना मुश्किल है।"

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निस्पृह लोकसेवी—डॉ० अंसारी

जून १९२७ में 'अर्जुन' में राजद्रोहात्मक सामग्री प्रकाशित करने के आरोप में पत्र के मुद्रक-प्रकाशक इंद्र विद्या वाचस्पति पर अभियोग चलाया गया। ब्रिटिश पक्षधर न्यायाधीशों ने उन्हें पाँच वर्ष के सश्रम कारावास का दंड दिया। सेशन जजी में अपील करने पर यह सजा घटाकर छह मास की कर दी गई।

इस कारावास के दिनों में, जब वे फिरोजपुर कारागृह में वंदी थे, वे असाध्य रोग से पीड़ित हो गए। उनका ज्वर निरंतर बना ही रहता था। उपचार चालू था फिर भी स्थिति में सुधार नहीं हो रहा था। उनके घर वाले डॉ० अंसारी के पास पहुँचे। डॉ० अंसारी एक सच्चे डॉक्टर ही नहीं पूरे सज्जन व पक्के देशभक्त भी थे। जो देश के लिए काम करते थे, वे उनकी चिकित्सा निःशुल्क करते थे। किंतु उन दिनों वे भी अपनी पारिवारिक मुसीबत में गिरफ्तार थे। बेगम अंसारी सख्त बीमार थीं। उन्हें तीव्र ज्वर चढ़ा हुआ था। ऐसी स्थिति में उन्हें छोड़कर जाना किसी भी प्रकार संभव नहीं था। एक दिन की कमाई चली जाने की ही बात नहीं थी, पत्नी को ऐसी स्थिति में छोड़कर जाने की बात भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं थी, वह शंकाओं से भरी हुई थी। किंतु वे भला कब रुकने वाले थे। देश का एक सिपाही बीमार हो और वे अपने परिवार के मोह में फँसे रहकर अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाएँ—यह उनकी अंतरात्मा को कदापि स्वीकार नहीं था। वे फिरोजपुर के लिए रवाना हो गए।

पूरे दो घंटे तक वे इंद्र विद्या वाचस्पति के साथ रहे। अपनी रिपोर्ट लिखकर जेल विभाग को देने के बाद वे शाम की गाड़ी से दिल्ली लौट आए। डॉक्टर साहब की सम्मति थी कि यदि उन्हें कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिनों और जेल में रहना पड़ा तो वे बचेंगे नहीं। वहाँ एक्स-रे तो उपलब्ध नहीं था। किंतु उन्होंने अपने अनुभव व ज्ञान के आधार पर अपनी मेडीकल रिपोर्ट के साथ रोगी की साँस नली व फेफड़ों का एक पेन्सिल स्केच भी संलग्न कर दिया था तथा जो स्थान क्षतिग्रस्त हो गए थे उन स्थानों पर निशान लगा दिए थे।

डॉ० अंसारी की इस रिपोर्ट पर जेल अधिकारियों को उन्हें मुक्त कर देना पड़ा। जेल से बाहर आने पर जब एक्स-रे करवाया गया तो चमत्कार की बात यह हुई कि एक्स-रे चित्रफलक व उनके पेन्सिल स्केच में गजब का साम्य था। एक साथ दो-दो चमत्कार हुए थे। डॉ० अंसारी की सज्जनता व उनकी निपुणता दोनों ही किसी चमत्कार से कम नहीं थे।

डॉ० साहब का पूरा जीवन ऐसी ही मानवीय उच्चताओं का कोषागार था। उन्होंने चिकित्सा को अपने प्राणों से अधिक ही समझा था। वे चिकित्सा को व्यवसाय नहीं खुदा की इबादत ही मानकर चलते थे। उनके जीवन की अंतिम घड़ियाँ भी इसी इबादत में बीतीं। अपनी सरल-निष्कपट सज्जनता व निर्लेप आत्मीयता के कारण वे अपने स्वास्थ्य की चिंता न करते हुए दूसरों की सेवा में ही जुटे रहे। परिणामतः बीमार पड़ गए। यह बीमारी उनके प्राण लेकर ही छूटी। ढलते शरीर को विश्राम की आबश्यकता थी, पर जहाँ सामने दूसरे के स्वास्थ्य का, जीवन का प्रश्न होता है, वहाँ अपने आराम की चिंता कोई स्वार्थी ही कर सकता है। अतः अपनी चिंता किए बिना वे दूसरों की सेवा में जुटे रहे।

मनुष्य शरीर मशीन नहीं बन सकता कि दिन-रात काम करता रहे किंतु हृदय भी तो पाषाण नहीं बन सकता। किसी मरीज से इनकार करना तो उन्होंने सीखा ही नहीं था। रात को ९ बजे किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रोगी को देखकर लौटे थे कि मित्र का फोन आ गया। मित्र की पत्नी बीमार थी। बिना भोजन किए ही उसे देखने चल दिए। वहाँ से ग्यारह बजे घर लौटे तो महात्मा गांधी की अस्वस्थता का समाचार आ पहुँचा सो वर्धा के लिए रवाना हो गए। आठ-दस दिन वहाँ लग गए। शरीर आराम चाहता था पर रोज ही परिस्थितियाँ ऐसी ही आ बनती थीं। काया पर पड़ने वाले इस भार ने उन्हें बीमार करके छोड़ा। यह बीमारी उनके प्राण लेकर ही गई।

डॉक्टर अंसारी पर मरीज भगवान का सा विश्वास करते थे। जब वे इस दुनिया में नहीं रहे तो लाखों व्यक्तियों ने अपने आप को आश्रयहीन पाया। लोग कहने लगे, "अबकी बार तो मैं बचूँगा नहीं। डॉक्टर अंसारी भी तो नहीं रहे जो मुझे मौत के मुँह से बचाते रहे थे।" मनुष्य जन्म में यह उपलब्धि जिसने प्राप्त कर ली निश्चय ही उसका जीवन सार्थक हो गया।

डॉक्टर अंसारी का जन्म उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में दिल्ली के एक संपन्न मुसलिम परिवार में हुआ था। उनका बचपन से ही ध्येय डॉक्टर बनकर जनसेवा करने का था। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने पूरे श्रम व मनोयोग से अध्ययन किया। उनकी अभिलाषा पूर्ण हुई, वे कुशल डॉक्टर बन गए।

अपने यौवन काल में ही उनकी ख्याति दिल्ली तथा आस-पास के क्षेत्र में फैल चुकी थी। यह ख्याति केवल चिकित्सक के नाते ही नहीं थी। वे पक्के देशभक्त भी थे तथा दिल्ली के जाने-माने जन-नेताओं में उनकी गणना होती थी। उन दिनों हवा ही कुछ ऐसी चल रही थी कि हर कोई युगधर्म पालन के लिए उठ खड़ा होता था। देश पर मर-मिटने, अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने की बलवती कामनाएँ प्रत्येक भावनाशील भारतवासी के हृदय में उठे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिना नहीं रहती थी। डॉक्टर अंसारी भला इन उमंगों से अछूते कैसे रह पाते।

उनका जीवन सज्जनता, निर्भीकता व राष्ट्रीयता की त्रिवेणी था। सुरसरिता भगीरथ में जैसे अन्य सरिताएँ स्वेच्छा से आ-आकर मिल जाती हैं वैसे ही उनके व्यक्तित्व रूपी गंगा में भी सद्गुणों की अनेकानेक नदियाँ आ-आकर मिल गई थीं। वे अपने समय के सर्वोत्कृष्ट चिकित्सक तो थे ही पक्के देशभक्त भी थे व हिंदू-मुसलिम एकता के प्रबल पक्षधर भी थे। एक खरे राजनीतिक नेता व पूरे तपस्वी वे थे। सज्जन तो इतने कि देने के लिए उनका हाथ सदा बढ़ा ही रहा। बिना किसी भेदभाव के उन्होंने अपने को मिली ईश्वरीय विभूतियों का लाभ जन-जन को दिया।

घर के रईस थे। हाथों में खुदा का कमाल था। लोग कराहते-चीखते-चिल्लाते उनके पास आते थे और हँसते हुए जाते थे। धन भी बरसता था और सद्भावनाएँ-शुभकामनाएँ उनके दीर्घजीवी होने की दुआएँ भी बरसती थीं। दरियागंज (दिल्ली) नं० १ में उनकी कोठी की विशालता व भव्यता देखते ही बनती थी किंतु वे इन सबसे निर्लिप्त थे। जल में रहकर भी जल से निर्लिप्त रहने वाले कमलपत्र की तरह जो पानी की बूँदों का स्वरूप तो निखार देता है पर उन्हें संग्रहीत करके अपने लिए रखना नहीं चाहता।

उनका यह उदार व व्यापक दृष्टिकोण उन्हें उस धन-संपदा व जायदाद का संरक्षक भर बनाए रहा। जब असहयोग आंदोलन चला तो उनकी यह आलीशान कोठी आजादी का समरांगण बन गई। इस कोठी में ऐसी-ऐसी सभाएँ हुई थीं, जिनमें लाख-दो लाख व्यक्ति एकत्रित हुए थे। जब किसी सभा के लिए, अधिवेशन के लिए स्थान नहीं मिलता तो डॉ० अंसारी की यह कोठी ही समस्या का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाधान बनती थी। उस समय डॉ० अंसारी की प्रसन्नता देखते ही बनती थी। वे कह उठते थे, "ईश्वर ने धन दिया, साथ ही उसके सदुपयोग करने के सुअवसर भी दिए। कितना दयालु है वह परम पिता परमेश्वर।"

सन् १९३० के सत्याग्रह में सबसे शानदार गिरफ्तारी डॉ० अंसारी की कोठी पर ही हुई थी। दिल्ली में कांग्रेस कार्यकारिणी सभा का अधिवेशन बुलाया गया था। सदस्यगण भिन्न-भिन्न स्थानों पर ठहरे थे किंतु अधिवेशन का स्थान उनकी कोठी ही चुना गया था। यह कम जोखिम का काम नहीं था। सरकार उनकी संपत्ति को जप्त भी कर सकती थी। अधिवेशन के दिन सरकार ने पुलिस का कड़ा पहरा रखा था। भिन्न-भिन्न स्थानों से सदस्यगण आ-आकर उनकी कोठी में एकत्रित हुए तथा सभा आरंभ हो गई। सभा आरंभ होने के दस मिनट बाद ही पुलिस ने गिरफ्तारियाँ आरंभ कर दीं। पं० मदनमोहन मालवीय, विट्ठल भाई पटेल, डॉ० अंसारी, विधानचंद्र राय, दीप नारायण सिंह आदि चोटी के नेता इसी समय बंदी बनाए गए थे। इलाहाबाद में आनंद भवन की जो भूमिका सत्याग्रह आंदोलन में रही दिल्ली में वही भूमिका उनकी दरियागंज वाली कोठी ने निभाई।

सत्याग्रह आंदोलन के अंतिम दौर में महात्मा गांधी जब लार्ड इरविन से मिलने दिल्ली आए तो कार्यकारिणी सभा का अधिवेशन इसी कोठी पर हुआ। डॉ० अंसारी ने भोजन व आतिथ्य का पूरा भार स्वयं उठाया। हजारों देशप्रेमियों का भोजन नित्य उनके यहाँ होता था। उस समय उनकी आर्थिक दशा ठीक नहीं थी। अतः उन्हें दस हजार रुपया कर्ज तक लेना पड़ा था। आजादी की लड़ाई में उनकी ऐसी शानदार भूमिका रही थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे कई बार जेलयात्रा भी कर चुके थे। अँगरेजों की नाक के नीचे रहते हुए वे अपने क्रिया-कलापों से उनके नाकों में दम किए रहते थे। जेल में भी वे उतने ही प्रसन्न रहते थे, जितने अपने भव्य व सुविधापूर्ण भवन में। उन्होंने अपने आप को परिस्थितियों से निर्लिप्त रखकर अपना कर्म करते रहना ही सीखा था।

जो व्यक्ति अपने स्वार्थ के वशीभूत हो आदर्शों का परित्याग कर देता था, उससे वे बहुत खिन्न हो उठते थे। एक बार मौलाना शौकत अली उनसे मिलने आए। वे उनके अच्छे मित्र ही नहीं रिश्तेदार भी थे किंतु राष्ट्रीय विचारधारा से विमुख हो जाने के कारण डॉक्टर साहब उनसे मिलना नहीं चाहते थे। मौलाना को उन्होंने कहला भेजा, "मैं आपसे मिलना नहीं चाहता।" मौलाना मानने वाले नहीं थे। वे डॉक्टर साहब को भी हिंदू-मुसलिम का भेद बताते हुए अपना पक्षधर बनाना चाहते थे। वे उनके पास आ धमके किंतु डॉक्टर अंसारी ने उनसे बात तक नहीं की। मौलाना को निराश होकर उनके पास से वापस जाना पड़ा।

अश्विनी कुमारों का वरद्हस्त तो उनके सिर पर था ही। वे लोगों को मौत के मुँह में से निकाल लाते थे। यह केवल उनके चिकित्सा ज्ञान का ही परिणाम नहीं था उनके उदार हृदय, सघन आत्मीयता, परदुःखकातरता व आदर्शनिष्ठ निस्पृह जीवन दर्शन का इसमें बड़ा हाथ था। सद्भावनाएँ और कर्त्तव्यनिष्ठा ही तो किसी के प्रयत्नों को सफल बनाती हैं।

अपने छोटे से जीवन में वे जितने बड़े काम कर गए, निश्चय ही यह उनकी महानता का परिचायक है। उनका जीवन एक खुली पुस्तक की तरह है जो हममें उसे पढ़ने व तदनुरूप आचरण करने की ललक उत्पन्न करता है।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धार्मिक उदारता के प्रतीक डॉ० जाकिर हुसैन

जामिया मिलिया के उपकुलपति को एक संबंधी का पत्र मिला। अपनी परिस्थितियों का हवाला देकर एक रिश्तेदार ने किसी पद पर नियुक्ति दिलवाने के लिए सिफारिश करने की बात कही थी। उपकुलपति थे डॉक्टर जाकिर हुसैन। जाकिर साहब ने संबंधी को बुलाया और पूछा, "तुम उस पद पर काम करना चाहते हो?"

रिश्तेदार ने कहा, "हाँ साहब! आपकी कृपादृष्टि हो जाय तो बड़ी मेहरबानी होगी।"

"मेरी सिफारिश का आधार क्या हो"— जाकिर साहब ने पूछा, "क्या तुम स्वयं को उस पद के काबिल समझते हो?"

"जी ! मैं काबिल हूँ तो सही पर आपकी सिफारिश से मेरा काम बन ही जायगा।"

बहुत देर से दबाया हुआ रोष फूट पड़ा। जाकिर साहब तमतमा कर बोले, "यदि सचमुच ही योग्य हो तो इससे बड़ी सिफारिश क्या हो सकती है। मुझे संस्थान की व्यवस्था करने का काम सौंपा गया है न कि अपने रिश्तेदारों को नौकरी देने का और उन्हें अफसर बनाने का।"

सिफारिश की आशा से गया रिश्तेदार डॉक्टर साहब की आदर्शवादिता के सामने परास्त होकर लौट आया और फिर कभी इनसे सिफारिश के लिए नहीं कहा। उनकी तरह हर उच्च पदाधिकारी इतनी सिद्धांतनिष्ठा अपना सके तो शासनतंत्र में घुस पड़ी भाई-भतीजावाद की महामारी आसानी से योग्य सत्पात्र लोगों को सुअवसर मिल सकने के लिए भाग खड़ी हो।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डॉक्टर साहब अपने जीवनकाल में शासकीय सेवा से लेकर राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने तक इसी सिद्धांतनिष्ठा को बनाए रहे। इसी कारण वे हर क्षेत्र में सफल रहे और अपने मिलने-जुलने वालों में समान रूप से प्रिय थे।

उनकी लोकप्रियता का अनुमान राष्ट्रपति चुनाव अभियान के सुचारु संचालन और उसकी सफलता से ही लगाया जा सकता है। संवैधानिक रूप से भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। यहाँ की जनसंख्या हिंदू बहुल है। हिंदू मतावलंबी स्वाभावत: ही उदार होते हैं फिर भी स्वतंत्रताप्राप्ति के साथ-साथ हिंदू-मुसलिम के आधार पर भारत विभाजन, मुसलिम बहुल प्रांतों से निर्मित पाकिस्तान में हिंदुओं पर अमानुषी अत्याचार और उनकी हत्याएँ आदि कारण ऐसे हैं जिससे हिंदू जनमानस में क्षोभ उत्पन्न होना स्वाभाविक था। जाकिर साहब मुसलिम धर्मानुयायी थे। कुछ तो क्षोभग्रसित हिंदू विरोधी बन बैठे और कुछ ने राजनीतिक लाभ उठाने के दृष्टिकोण से उनका विरोध किया। ऐसे विरोधी लोगों का प्रतिपादन था कि ऐसे हिंदू राष्ट्र का अध्यक्ष मुसलमान नहीं बन सकता। भारतीय संविधान के अनुसार राष्ट्राध्यक्ष पद के लिए उनकी अयोग्यता का कोई कारण नहीं था। पर लोकभावना, लोकभावना ठहरी। जाकिर साहब का प्राय: हर क्षेत्र में विरोध हुआ फिर भी प्रबुद्ध संसद सदस्यों ने उनकी योग्यता, नेतृत्व और प्रभावशाली व्यक्तित्व के बल पर उन्हें राष्ट्रपति चुना।

राष्ट्रपति चुने जाने के बाद उन्होंने जो काम किया, वह उनकी महानता को सिद्ध करता है। भारत की जनता धर्मप्राण है और यहाँ का संविधान धर्म निरपेक्ष। डॉक्टर साहब ने धर्मप्राण जनता की भावनाओं को संतुष्ट करने के लिए राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते ही हिंदुओं के श्रद्धेय संत शंकराचार्य और जैन मुनि श्री सुशील कुमार के सर्वप्रथम चरण स्पर्श किए। लोगों को सहज विश्वास हो गया कि जाकिर साहब मुसलिम होते हुए भी उदार हैं और उनकी दृष्टि में मुख्यतया जनभावना ही महत्त्वपूर्ण है।

कुछ कट्टर मुसलिम रुष्ट हुए। एक मुसलमान सदा-सदा की शत्रु जाति के धर्माचार्य का चरण स्पर्श क्यों करे? कुछ ने उन्हें काफिर कहा। कुछ ने बहिष्कार भी किया। पर डॉक्टर साहब निश्चिंत रहकर अपने काम में लगे रहे। कुछ उदार संप्रदायवादी नेताओं ने डॉक्टर साहब से पूछा, "आपने दीर्घ अवधि तक मुसलिम जाति की गुलाम रही जनता के धर्माचार्य का चरण स्पर्श किस भावना से प्रेरित होकर किया?"

डॉक्टर साहब ने जो जवाब दिया उसका मार्मिक तथ्य हर भारतीय नागरिक के लिए अनुकरणीय है। जाकिर साहब ने कहा, "हिंदुस्तान का हर नागरिक सबसे पहले हिंदू है बाद में और कुछ। मैंने हिंदुओं के मजहबपरस्ती को नहीं उस राष्ट्रीय और सार्वभौम नागरिक भावना का सम्मान किया है। हम इनसान हैं, हिंदुस्तान के निवासी होने के कारण हिंदू हैं फिर उसके बाद कुछ और।"

उनके उपराष्ट्रपति काल की ही एक घटना है। किसी मुसलमान सज्जन ने पत्र लिखा जिसमें बार-बार इस बात को दोहराया गया था कि मैं मुसलमान हूँ और आप भी मुसलमान हैं। इस कारण एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान का काम अवश्य करना ही चाहिए। खत में जगह-जगह मुसलमान-मुसलमान लिखा गया था। जाकिर साहब ने वह पत्र अपने पर्सनल असिस्टेंट को देते हुए कहा, "इस बेचारे को यह नहीं मालूम है कि मैं मुसलमान नहीं हूँ।" कितना सच है यह! एक धर्म निरपेक्ष देश का उपराष्ट्रपति किसी संप्रदाय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का अनुदार अनुयायी नहीं हो सकता। उनके अपने विचारों से तो हिंदुस्तान का प्रत्येक नागरिक सबसे पहले हिंदू ही है।

अपने पद की गरिमा और उत्तरदायित्व को भलीभाँति समझते हुए ही उसका समुचित निर्वाह किया जा सकता है। काम के प्रति संपूर्ण हृदय से आस्थावान बने रहना ही उनकी पूजापद्धति थी। देश के नवयुवकों के नाम उनका संदेश था, "ईमानदारी तथा निष्ठा के साथ काम करो और आगे बढ़ो।" इस संदेश को उन्होंने सर्वप्रथम अपने जीवन में उतारा। महापुरुषों के जीवन चरित्रों में सैकड़ों महान घटनाएँ देखी-सुनी जाती हैं। जाकिर साहब के व्यक्तित्व की महानता के संबंध में भी अगणित घटनाएँ घटित हुईं और उन सबका सारतत्त्व उनके इन्हीं शब्दों में है—'ईमानदारी और निष्ठा।'

ईमानदारी से काम करने का अर्थ है—कर्त्तव्यपरायणता। निष्ठा, तन्मयता, श्रम आदि अनेक सद्गुण कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहने से सेंत-मेंत ही आ जाते हैं।

राष्ट्रपति के कार्यकाल में तो वे अपने काम में इतने लवलीन हो जाते कि उन्हें दूसरी बातों का ध्यान ही नहीं रहता। इस आदत के कारण उनकी पत्नी प्रायः परेशान हो जाया करतीं। बार-बार खाना लगा दिए जाने की सूचना लेकर नौकर आता और जाकिर साहब 'अभी आया' कहकर फिर से काम में लग जाते। खाने की बात भी ध्यान से उतर जाती। दूसरी-तीसरी बार में नौकर के बार-बार आग्रह करने पर आते और कभी-कभी तो उनकी पत्नी को ही आना पड़ता।

उनके स्वभाव की सबसे बड़ी विशेषता थी—सादगी और व्यवस्था। राष्ट्रपति के पद पर काम करते हुए भी निर्धारित वेतन का बहुत छोटा सा भाग उन्होंने अपने लिए प्रयोग किया, शेष सब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जनसेवा के लिए लगा दिया। राष्ट्र की संपत्ति राष्ट्र को समर्पित। उनकी सादगी और निष्ठा को देखकर उनके विरोधी भी उनके समर्थक बन गए। अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के माध्यम से उन्होंने सिद्ध कर दिया कि प्रतिपक्षी पर नैतिक विजय प्राप्त करने के लिए स्वयं का कितना आत्मपरिष्कार करना पड़ता है, स्वयं को कितना विशुद्ध बनाना पड़ता है।

जाकिर साहब नहीं रहे पर उन्होंने अपने जीवन में उतारकर जिन जीवन मूल्यों की स्थापना की यदि उन्हें हर नागरिक स्वीकार कर ले और अपनाने लगे तो सुविस्तृत समाज की महती आवश्यकता पूरी हो सकती है।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक सच्चे जनसेवक काजी जी

भोपाल से लगभग पैंतीस किलोमीटर की दूरी पर एक गाँव है—दोहादा! उसका बच्चा-बच्चा आपको काजी जी का पता बता देगा। काजी जी का परोपकारी व्यक्तित्व उस गाँव पर ऐसे ही छा गया है जैसे आकाश में सावन के जीवनदायी काले-काले मेघ।

काजी जी जिनका पूरा नाम अजीजुर्रहमान काजी है, सन् १९४५ में मुजफ्फरपुर जिले से भोपाल आए और दोहादा में बस गए। यहाँ की दशा उस समय बड़ी ही दयनीय थी। न कोई सुविधाएँ थीं और न साधन। अशिक्षा तथा अज्ञान के मारे सीधे-साधे ग्रामीण एक ढर्रे की जिंदगी वर्षों से जीते चले आ रहे थे। किंतु गाँव में काजी जी क्या आए लोगों में नया जीवन और नई चेतना आ गई। काजी जी उन व्यक्तियों में नहीं हैं, जो समय के प्रवाह में परिस्थितियों के थपेड़े खाते रहते हैं और उसी में बहते रहते हैं। वे तो परिस्थितियों को अपने ढंग से मोड़कर चलने योग्य बनाने के अभ्यस्त हैं।

सत्तर-बहत्तर वर्ष की आयु में भी नवयुवकों जैसी लगन तथा उत्साह को लेकर कार्यरत हैं वे। गाँव को नया ही रूप दे दिया है उन्होंने। गाँव में अधिकांश लोग खेतिहर हैं। पहले तो ईश्वर की इच्छा पर ही निर्भर था बेचारों का जीवनयापन। वर्षा हो गई तो फसल अच्छी हो गई, अन्यथा बेचारे साल भर खाने को भी तरसते। काजी जी ने सोचा यों हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहे और आकाश की ओर आशा की दृष्टि से देखते भर रहें तो उसमें न तो प्रशंसा की बात है और न पुरुषार्थ की। अपनी सुविधाएँ अपने हाथों ही जुटाना चाहिए। उन्होंने कुछ जनजाग्रति द्वारा और कुछ राजकीय सहायता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

द्वारा इस समस्या का निदान करने की सोची। निरंतर प्रयत्न करने से तो ईश्वर भी पास आ जाता है फिर छोटी-मोटी सफलताओं की तो बात ही क्या है! उनका श्रम सार्थक हुआ और सन् छप्पन में गाँव में एक बड़ा तालाब बनकर तैयार हुआ, जिससे संपूर्ण गाँव की सिंचाई समस्या हल हो गई।

खेती करने के अच्छे तरीके तथा खादों के विभिन्न नमूनों के निर्माण एवं क्रय करने, उनका उपयोग करने की ओर भी उन्होंने जनरुचि को मोड़ा। बीज भी अच्छा दिलवाने की व्यवस्थाएँ कीं और इस प्रकार खेती का स्तर एकदम ऊँचा कर गाँव में खुशहाली के फूल खिलाए।

बीमारियों की जड़ गंदगी में होती है। काजी जी ने ग्रामीणों को नित्य संध्या समय एकत्रित करके समझाना तथा परामर्श देना प्रारंभ किया। उन्हें गंदगी से उत्पन्न होने वाली बीमारियों तथा हानियों से परिचित कराया। साफ रहने की सुरुचि उत्पन्न की तथा साफ रहना सिखाया।

पेयजल की भी व्यवस्था की। इस प्रकार गाँव वालों की सुविधाएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती गईं। समस्त अच्छाइयों की कुंजी है—शिक्षा। काजी जी ने इस ओर भी सबका ध्यान आकृष्ट किया और दोहादा गाँव में मिडिल स्कूल भी खुल गया। शिक्षा के महत्त्व से काजी जी ने प्रत्येक व्यक्ति के हृदय को परिचित कराया है।

प्रयत्न हो रहा है कि वहाँ शीघ्र ही हायर सैकेंडरी स्कूल की स्थापना भी हो जाय। एक और भी प्रयत्न काजी जी कर रहे हैं वह है गाँव में बिजली की लाइन डालने का। शीघ्र ही वे ग्रामीणों के हृदय की भाँति ही गाँव को भी प्रकाश से दमकता देखना चाहते हैं।

और सबसे बड़ा काम जो काजी जी ने किया वह है—मुसलिम धर्म की एक मूढ़ मान्यता का उन्मूलन। प्रत्येक मुसलिम परिवार,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहे वह कितना ही दरिद्र हो, परिवार नियोजन को नहीं मानता। उनका यही तर्क रहता है कि यह हमारे धर्म के विरुद्ध है, फिर चाहे जितनी दरिद्रता हो, चाहे जितनी परेशानी हो।

किंतु काजी जी ने अपने मुसलिम ग्रामवासी भाइयों को समझाया कि ईश्वर ऐसी किसी बात को करने के लिए नहीं कहता जो मानव जीवन की सुख-शांति का घातक हो। प्रत्येक धर्म यही सिखाता है कि मानव वास्तविक सुख-शांति का जीवन जिए। जान-बूझकर कठिनाइयों को, मुसीबतों को और असुविधाओं को गले लगाने का उपदेश कोई भी धर्म नहीं करता। उनका कहना है कि परिवार नियोजन को न मानने का कारण केवल अज्ञान है। इसी कारण वे डरते हैं, अपनी धर्मांधता का परिचय देते हैं। लेकिन उनका ख्याल है कि धीरे-धीरे शिक्षा बढ़ेगी और उसी अनुपात में लोग विवेकपूर्ण बातों को अपनाते चले जाएँगे।

उन्होंने इस दिशा में लोगों को व्यक्तिगत परामर्श तथा विचार-विमर्श द्वारा आगे बढ़ने को प्रोत्साहित किया है और छोटे से गाँव में भी लगभग चालीस-पचास नसबंदी के ऑपरेशन करवाए हैं।

धर्म का स्वरूप युग की आवश्यकता के अनुरूप परिवर्तित होता रहता है। मूल मान्यताएँ वे ही रहती हैं किंतु तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा नैतिक परिस्थितियों के अनुरूप उसको मानने, उसे जीवन में उतारने के लिए उपयोग के अनुकूल बना लेने में ही बुद्धिमत्ता है।

विवेक के स्थान पर विवेक और परंपरा के स्थान पर परंपरा। काजी जी ने गाँव में एक मसजिद का भी निर्माण करवाया जिससे गाँव के सभी मुसलमान भाई लाभ उठाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दोहादा को इस बहत्तर वर्ष के युवावृद्ध ने इतना संपन्न बना दिया है कि सभी उन्हें अपना मार्गदर्शक, हितचिंतक तथा शुभेच्छु मानते हैं। प्रत्येक व्यक्ति उन्हें अपना स्वजन ही मानता है। सभी उनसे समान स्नेह तथा दिशा ज्ञान पाते हैं। वे भी सबको अपना आत्मीय परिजन ही मानते हैं और सद्भावना तथा सौहार्द्र के साथ सभी की समस्याएँ सुलझाने में निरत रहते हैं।

गाँव की अन्य समस्याओं की तरफ भी उनका ध्यान है जो अभी सुलझाई नहीं जा सकी हैं। इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समस्या एक अस्पताल की है जिसकी कि दोहादा में बहुत ही आवश्यकता है। सबसे अधिक निकट का अस्पताल यहाँ से लगभग चौदह किलोमीटर दूर उबैदुल्लागंज में है। मरीज को ले जाने में ही काफी समय लग जाता है। रास्ता भी बड़ा खराब है। काजी जी इस कार्य के लिए विशेष प्रयत्नशील हैं। उनकी योजना है कि चंदा करके सार्वजनिक पैसे से वार्ड का निर्माण कर लिया जाय, तब शासन द्वारा डॉक्टर की नियुक्ति भी सहज ही हो जाएगी।

गाँव की आत्मा में जैसे काजी जी की चेतना समा गई है। ग्रामवासियों का दुःख उनका अपना दुःख है। ग्रामवासियों की समस्याएँ उनकी अपनी समस्या है। लगभग डेढ़ हजार की आबादी वाले इस ग्राम को काजी जी प्रत्येक दृष्टि से स्वावलंबी, आत्मनिर्भर तथा आदर्श गाँव बनाना चाहते हैं। एक बड़ी सीमा तक वे इस दिशा में सफल भी हो चुके हैं। शेष जीवन भी इसी एक यज्ञवेदी पर हवन होना है। सफलताएँ उनकी राह देख रही हैं।

देश में प्रचलित अनेक हानिप्रद रूढ़ियों से काजी जी की आत्मा अत्यंत दुखी है। उनके उन्मूलन के लिए अपने गाँव में वे सतर्क और सचेष्ट हैं, किंतु इसमें अभी वे सफलता प्राप्त नहीं कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सके हैं। गाँव की अधिकांश जनता अशिक्षित और परंपरावादी होने के कारण इस ओर से उदासीन है, किंतु वे अपने मधुर व्यवहार और कुशल नेतृत्व के बल पर निकट भविष्य में ही इन विनाशकारी रूढ़ियों का उन्मूलन करने में भी अवश्य सफलता प्राप्त कर लेंगे, ऐसी आशा की जाती है।

काश! प्रत्येक गाँव में एक-एक ही ऐसा महापुरुष हो जाए, तो इस पवित्र भूमि भारत का नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं चारित्रिक विकास होते देर न लगे और हम अपना गंतव्य पा सकें।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

- ✧ हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- ✧ शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- ✧ मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- ✧ इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।
- ✧ अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- ✧ मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
- ✧ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- ✧ चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- ✧ अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- ✧ मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- ✧ दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिएँ पसंद नहीं।
- ✧ नर-नारी के प्रति परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- ✧ संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
- ✧ परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
- ✧ सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- ✧ राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
- ✧ मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है—इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- ✧ 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा', 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

❐❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org